RNI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

GARVI GUJARAT

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 338
दि. 11.04.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

‘सोनार बांग्ला’ का संकल्प: अमित शाह ने जारी किया बीजेपी का घोषणापत्र, 7वें वेतन आयोग से लेकर यूसीसी तक बड़े वादों की झड़ी

अमित शाह के पश्चिम बंगाल दौरे के दौरान शुक्रवार को राजनीतिक हलचल उस समय तेज हो गई, जब उन्होंने आगामी विधानसभा चुनाव 2026 के लिए भारतीय जनता पार्टी का बहुप्रतीक्षित घोषणापत्र जारी किया। कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम में शाह ने इस संकल्प पत्र को ‘भरोसे का पत्र’ बताते हुए कहा कि यह केवल चुनावी वादों का दस्तावेज नहीं, बल्कि बंगाल के भविष्य का रोडमैप है, जो राज्य को विकास, रोजगार और सुरक्षा के नए रास्ते पर ले जाने का काम करेगा।

बीजेपी ने अपने इस घोषणापत्र को ‘सोनार बांग्ला’ की अवधारणा से जोड़ते हुए राज्य के हर वर्ग—किसान, युवा, महिला और कर्मचारी—को ध्यान में रखते हुए तैयार करने का दावा किया है। अमित शाह ने कहा कि यह संकल्प पत्र मौजूदा निराशा के माहौल को खत्म कर उम्मीद और प्रगति की नई शुरुआत करेगा। उन्होंने भरोसा दिलाया कि यदि राज्य में बीजेपी की सरकार बनती है, तो मुख्यमंत्री भी बंगाल का ही बेटा होगा, जिससे स्थानीय नेतृत्व को प्राथमिकता दी जाएगी।

घोषणापत्र में सबसे बड़ा और चर्चित वादा सरकारी कर्मचारियों के लिए किया गया है। अमित शाह ने घोषणा की कि सत्ता में आने के 45 दिनों के भीतर राज्य में सातवें वेतन आयोग को लागू किया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र सरकार की सभी योजनाओं—जैसे आयुष्मान भारत—को भी राज्य में प्रभावी रूप से लागू किया जाएगा। कर्मचारियों को महंगाई भत्ता (डीए) सुनिश्चित करने का भी वादा किया गया है, जो लंबे समय से राज्य में एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है।

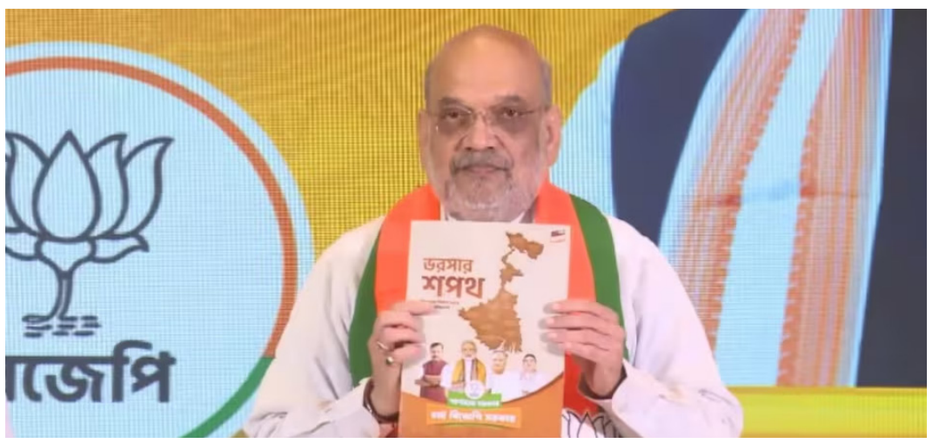

घोषणापत्र का एक और प्रमुख आकर्षण समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लेकर किया गया वादा है। शाह ने कहा कि बीजेपी सरकार बनने के छह महीने के भीतर राज्य में यूसीसी लागू करेगी। इसके अलावा महिलाओं और युवाओं के लिए भी बड़े आर्थिक पैकेज की घोषणा की गई है। ‘लक्ष्मी भंडार’ योजना के लाभार्थियों को हर महीने 3000 रुपये देने का वादा किया गया है, जिससे महिला सशक्तिकरण को नई दिशा देने की बात कही गई है।

महिलाओं को लेकर बीजेपी ने कई महत्वपूर्ण वादे किए हैं। राज्य में पुलिस सहित सभी सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की गई है। इसके साथ ही 75 लाख महिलाओं को ‘लखपति दीदी’ बनाने का लक्ष्य रखा गया है, जो आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम बताया जा रहा है। सुरक्षा के लिहाज से हर मंडल में महिला थाने और महिला डेस्क स्थापित करने की योजना भी घोषणापत्र में शामिल है, ताकि महिलाओं को त्वरित और प्रभावी सहायता मिल सके।

घोषणापत्र में गर्भवती महिलाओं के लिए 21 हजार रुपये की आर्थिक सहायता और 6 पोषण किट देने का वादा किया गया है। इसके अलावा राज्य की बसों में महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा सुविधा लागू करने की बात कही गई है। यह कदम महिलाओं की रोजमर्रा की जिंदगी को आसान बनाने के साथ-साथ उनके आर्थिक बोझ को कम करने के उद्देश्य से जोड़ा जा रहा है।

किसानों को भी घोषणापत्र में विशेष स्थान दिया गया है। बीजेपी ने वादा किया है कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत मिलने वाली राशि में राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त 3000 रुपये जोड़े जाएंगे, जिससे किसानों को सालाना 9000 रुपये की सहायता मिल सकेगी। इसके साथ ही मवेशी तस्करी पर सख्त रोक लगाने का भी ऐलान किया गया है, जिसे कानून-व्यवस्था और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़ा बड़ा मुद्दा माना जा रहा है।

अमित शाह ने अपने संबोधन में कहा कि यह घोषणापत्र केवल वादों का पुलिंदा नहीं, बल्कि एक ठोस कार्ययोजना है, जिसे लागू कर बंगाल को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि राज्य की सांस्कृतिक पहचान और गौरव को पुनर्स्थापित करना भी बीजेपी के एजेंडे का अहम हिस्सा है।

इस दौरान राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप भी देखने को मिले। पूर्व टीएमसी नेता हुमायूं कबीर से जुड़े वायरल वीडियो पर सवाल पूछे जाने पर अमित शाह ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि बीजेपी और हुमायूं कबीर का कोई संबंध नहीं है और दोनों के बीच दूरी ‘नॉर्थ पोल और साउथ पोल’ जैसी है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि ऐसी वीडियो राजनीतिक साजिश का हिस्सा हो सकती हैं और इसे गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए।

अमित शाह ने यह भी कहा कि बीजेपी सिद्धांतों की राजनीति करती है और वह ऐसे लोगों के साथ समझौता नहीं करेगी, जिनकी विचारधारा पार्टी से मेल नहीं खाती। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि विकल्प हो तो बीजेपी ऐसे लोगों के साथ गठबंधन करने के बजाय लंबे समय तक विपक्ष में बैठना पसंद करेगी।

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव 2026 को लेकर राजनीतिक माहौल तेजी से गरमाता जा रहा है और बीजेपी का यह घोषणापत्र चुनावी मुकाबले को और भी दिलचस्प बना सकता है। एक ओर जहां पार्टी ने बड़े-बड़े वादों के जरिए मतदाताओं को लुभाने की कोशिश की है, वहीं अब यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इन वादों का जनता पर कितना प्रभाव पड़ता है। कुल मिलाकर, बीजेपी का यह संकल्प पत्र राज्य में विकास, रोजगार, महिला सशक्तिकरण और सुरक्षा के मुद्दों को केंद्र में रखकर तैयार किया गया है। अब आने वाले समय में यह स्पष्ट होगा कि यह घोषणापत्र बंगाल की राजनीति में कितना बड़ा बदलाव ला पाता है और क्या यह पार्टी को सत्ता तक पहुंचाने में सफल होता है या नहीं।

“सांप पर भरोसा, भाजपा पर नहीं”: ममता बनर्जी का तीखा हमला, मतदाता सूची और एजेंसियों को लेकर उठाए गंभीर सवाल

पश्चिम बंगाल की राजनीति में चुनावी सरगर्मी अपने चरम पर पहुंच चुकी है और इसी बीच ममता बनर्जी ने उत्तर 24 परगना के टेंटुलिया में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी पर जोरदार हमला बोला। अपने तीखे और आक्रामक अंदाज के लिए जानी जाने वाली ममता बनर्जी ने इस बार भाजपा की विश्वसनीयता पर सवाल उठाते हुए ऐसा बयान दिया, जिसने राजनीतिक माहौल को और गर्म कर दिया। उन्होंने कहा कि “सांप पर भरोसा किया जा सकता है, लेकिन भाजपा पर कभी नहीं,” और इस बयान के साथ उन्होंने केंद्र सरकार और उसकी नीतियों पर गंभीर आरोप लगाए। रैली के दौरान ममता बनर्जी ने दावा किया कि भाजपा को स्थानीय लोगों के समर्थन पर भरोसा नहीं है, इसलिए वह बाहरी लोगों के सहारे चुनाव जीतने की कोशिश कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि असम में चुनाव के दौरान उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से करीब 50 हजार लोगों को ट्रेनों में भरकर लाया गया, ताकि चुनावी समीकरण को प्रभावित किया जा सके। उनके इस बयान ने भाजपा की चुनावी रणनीति पर सवाल खड़े कर दिए हैं और इसे लेकर राजनीतिक बहस तेज हो गई है।

मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में केंद्र सरकार पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने देश की सभी प्रमुख सरकारी एजेंसियों को अपने नियंत्रण में ले लिया है, जिससे उनकी निष्पक्षता पर सवाल उठने लगे हैं। ममता बनर्जी ने कहा कि आज स्थिति यह हो गई है कि कोई भी संस्था स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर पा रही है और हर जगह राजनीतिक दबाव का प्रभाव दिखाई देता है। उनका यह आरोप सीधे तौर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं की साख से जुड़ा हुआ है, जो चुनावी माहौल में एक बड़ा मुद्दा बन सकता है। इस रैली में ममता बनर्जी ने सबसे ज्यादा जोर मतदाता सूची के मुद्दे पर दिया। उन्होंने ‘विशेष गहन पुनरीक्षण’ (SIR) प्रक्रिया को लेकर गंभीर चिंता जताई और दावा किया कि पश्चिम बंगाल में इस प्रक्रिया के दौरान करीब 90 लाख मतदाताओं के नाम सूची से हटा दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि एक रिपोर्ट के अनुसार, इनमें लगभग 60 लाख हिंदू और 30 लाख मुस्लिम मतदाता शामिल हैं, जो इस मुद्दे को और भी संवेदनशील बनाता है।

ममता बनर्जी ने इस पूरे मामले की तुलना राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) से की, जो पहले असम में लागू किया गया था। उन्होंने कहा कि असम में एनआरसी के दौरान करीब 19 लाख लोगों के नाम सूची से बाहर हो गए थे, और अब बंगाल में उससे भी बड़ी संख्या में लोगों को मतदाता सूची से हटाया जा रहा है। उन्होंने इसे केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि लोगों के अधिकारों और पहचान से जुड़ा गंभीर मुद्दा बताया।

टीएमसी प्रमुख ने चेतावनी देते हुए कहा कि यह केवल चुनावी प्रक्रिया का सवाल नहीं है, बल्कि बंगाल की पहचान और यहां के लोगों के अस्तित्व की लड़ाई है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे इस मुद्दे को गंभीरता से लें और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एकजुट हों। उनके इस बयान ने यह स्पष्ट कर दिया कि आगामी चुनाव में मतदाता सूची का मुद्दा प्रमुख चुनावी एजेंडा बनने जा रहा है। ममता बनर्जी ने यह भी कहा कि उनकी सरकार हमेशा लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए खड़ी रही है और आगे भी खड़ी रहेगी। उन्होंने भरोसा दिलाया कि किसी भी नागरिक के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा और यदि किसी का नाम गलत तरीके से हटाया गया है, तो उसे वापस जोड़ा जाएगा। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि ममता बनर्जी का यह आक्रामक रुख आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए अपनाया गया है। उनके बयानों से यह साफ है कि टीएमसी इस बार चुनाव में मतदाता सूची, पहचान और अधिकार जैसे मुद्दों को केंद्र में रखकर भाजपा को घेरने की रणनीति पर काम कर रही है। दूसरी ओर, भाजपा की ओर से इन आरोपों पर अभी तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है, लेकिन माना जा रहा है कि पार्टी जल्द ही इन आरोपों का जवाब दे सकती है। आने वाले दिनों में यह मुद्दा और भी तूल पकड़ सकता है और चुनावी बहस का केंद्र बन सकता है। कुल मिलाकर, ममता बनर्जी का यह बयान केवल एक राजनीतिक हमला नहीं, बल्कि एक व्यापक रणनीति का हिस्सा नजर आता है, जिसके जरिए वह मतदाताओं को जागरूक करने और भाजपा के खिलाफ माहौल बनाने की कोशिश कर रही हैं। अब देखना यह होगा कि जनता इन आरोपों को किस नजरिए से देखती है और चुनावी परिणामों पर इसका कितना असर पड़ता है।

मतदाता सूची विवाद पर सुप्रीम कोर्ट सख्त: 13 अप्रैल को अहम सुनवाई, संवैधानिक अधिकार बनाम प्रक्रिया पर होगी बहस

नई दिल्ली में चुनावी प्रक्रिया को लेकर एक महत्वपूर्ण संवैधानिक मुद्दा सामने आया है, जिस पर अब देश की सर्वोच्च अदालत की नजर है। सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची को फ्रीज किए जाने के खिलाफ दायर याचिका पर 13 अप्रैल को सुनवाई करने का निर्णय लिया है। यह मामला न केवल चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता से जुड़ा है, बल्कि करोड़ों मतदाताओं के संवैधानिक अधिकारों को भी सीधे तौर पर प्रभावित करता है।

दरअसल, चुनाव आयोग ने उन विधानसभा सीटों के लिए 9 अप्रैल को मतदाता सूची को अंतिम रूप दे दिया है, जहां पहले चरण का मतदान प्रस्तावित है। इसी फैसले को चुनौती देते हुए याचिकाकर्ताओं ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। उनका कहना है कि बड़ी संख्या में ऐसे मतदाता हैं, जिनके नाम सूची से हटाए जाने के खिलाफ अपीलें अभी भी लंबित हैं, बावजूद इसके आयोग ने सूची को फ्रीज कर दिया, जिससे कई योग्य मतदाता अपने मतदान के अधिकार से वंचित हो सकते हैं।

इस संवेदनशील मामले की सुनवाई के लिए जो पीठ गठित की गई है, उसमें न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम. पंचोली शामिल हैं।

अदालत ने स्पष्ट संकेत दिए हैं कि वह इस मामले में विस्तार से सभी पक्षों की दलीलें सुनेगी और यह जांच करेगी कि क्या चुनाव आयोग की प्रक्रिया संविधान के मूल सिद्धांतों के अनुरूप है या नहीं।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश अधिवक्ता ने अदालत को बताया कि लाखों मतदाताओं की अपीलें अभी लंबित हैं और उन्हें सुने बिना ही मतदाता सूची को अंतिम रूप देना लोकतांत्रिक अधिकारों के साथ अन्याय है। इस पर चुनाव आयोग की ओर से यह दलील दी गई कि चुनाव प्रक्रिया को समय पर पूरा करने के लिए एक निश्चित ‘कट-ऑफ’ तिथि तय करना आवश्यक होता है, ताकि मतदान में किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो।

हालांकि, इस तर्क पर न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की टिप्पणी ने मामले को और अधिक गंभीर बना दिया। उन्होंने कहा कि मतदान का अधिकार केवल एक प्रक्रिया का हिस्सा नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण संवैधानिक अधिकार है, जो किसी भी प्रशासनिक समय-सीमा से अधिक स्थायी और महत्वपूर्ण है। अदालत की यह टिप्पणी इस बात का संकेत है कि वह इस मामले को केवल तकनीकी मुद्दे के रूप में नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारों के व्यापक दृष्टिकोण से देख रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि किसी भी व्यक्ति को स्थायी रूप से उसके मतदान के अधिकार से वंचित नहीं किया जा रहा है, लेकिन यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्रक्रिया निष्पक्ष और न्यायसंगत हो। इससे पहले अदालत को यह जानकारी दी गई थी कि लगभग 60 लाख दावों और आपत्तियों का निपटारा पहले ही किया जा चुका है, जो इस प्रक्रिया की व्यापकता को दर्शाता है।

मामले की गंभीरता को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अदालत ने कलकत्ता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से आग्रह किया है कि वे पूर्व वरिष्ठ न्यायाधीशों की एक तीन सदस्यीय समिति का गठन करें। यह समिति उन 19 ट्रिब्यूनलों के लिए एक समान कार्यप्रणाली तैयार करेगी, जो मतदाता सूची से नाम हटाए जाने के खिलाफ दायर अपीलों की सुनवाई कर रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी मामलों में एकरूपता और पारदर्शिता बनी रहे।

यह मामला ऐसे समय में सामने आया है, जब पश्चिम बंगाल में चुनावी माहौल गर्म है और हर राजनीतिक दल मतदाताओं को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रहा है। ऐसे में मतदाता सूची से जुड़े किसी भी विवाद का सीधा असर चुनाव परिणामों पर पड़ सकता है। यही वजह है कि इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई को बेहद अहम माना जा रहा है। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि यह सुनवाई भविष्य में चुनावी प्रक्रियाओं के लिए एक मिसाल बन सकती है। अदालत का फैसला यह तय कर सकता है कि प्रशासनिक प्रक्रिया और संवैधानिक अधिकारों के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए। यदि अदालत यह मानती है कि मतदाता सूची को फ्रीज करने से नागरिकों के अधिकार प्रभावित हो रहे हैं, तो चुनाव आयोग को अपनी प्रक्रिया में बदलाव करना पड़ सकता है।

राज्यसभा में हरिवंश की वापसी: राष्ट्रपति ने किया मनोनयन, फिर उपसभापति बनने की अटकलें तेज

नई दिल्ली की सियासी गलियारों में एक बार फिर हलचल तेज हो गई है, जब हरिवंश नारायण सिंह को दोबारा राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया। द्रौपदी मुर्मू द्वारा किए गए इस मनोनयन ने न केवल उनके राजनीतिक करियर को नया आयाम दिया है, बल्कि उच्च सदन में उनके संभावित रूप से फिर उपसभापति बनने की चर्चाओं को भी हवा दे दी है। यह फैसला ऐसे समय में आया है, जब राज्यसभा में कई अहम पदों और समीकरणों को लेकर राजनीतिक हलचल जारी है।

हरिवंश नारायण सिंह को यह मनोनयन उस सीट के लिए दिया गया है, जो पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई के रिटायर होने के बाद रिक्त हुई थी। इस नियुक्ति के साथ ही हरिवंश अब वर्ष 2032 तक राज्यसभा सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं देंगे। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने उन्हें अपने कक्ष में पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई, जो इस नियुक्ति की औपचारिक पुष्टि का महत्वपूर्ण चरण था।

हरिवंश का राजनीतिक और संसदीय अनुभव काफी समृद्ध रहा है। वह पहले भी राज्यसभा के उपसभापति रह चुके हैं और अपने शांत, संतुलित और निष्पक्ष संचालन के लिए जाने जाते हैं। उनके पिछले कार्यकाल का समापन 9 अप्रैल को हुआ था, जिसके बाद यह माना जा रहा था कि उनकी सक्रिय भूमिका अब सीमित हो सकती है। लेकिन राष्ट्रपति के इस फैसले ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनकी उपयोगिता और अनुभव को अभी भी राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

इस पूरे घटनाक्रम की एक दिलचस्प बात यह भी है कि इस बार जनता दल (यूनाइटेड) यानी जेडीयू ने उनके नाम का प्रस्ताव नहीं दिया था। इसके बावजूद उनका मनोनयन सीधे राष्ट्रपति के माध्यम से किया जाना कई राजनीतिक संकेत देता है। हरिवंश को लंबे समय तक बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का करीबी माना जाता रहा है, लेकिन हाल के समय में दोनों के बीच दूरी की खबरें सामने आती रही हैं। ऐसे में उनका यह मनोनयन राजनीतिक समीकरणों में एक नए मोड़ के रूप में देखा जा रहा है।

इसी बीच यह भी उल्लेखनीय है कि नीतीश कुमार ने भी हाल ही में राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ली है। ऐसे में बिहार की राजनीति और राष्ट्रीय स्तर पर जेडीयू की भूमिका को लेकर नए सवाल खड़े हो रहे हैं। हरिवंश का स्वतंत्र रूप से मनोनीत होना इस बात का संकेत माना जा रहा है कि अब उनका राजनीतिक दायरा पार्टी की सीमाओं से आगे बढ़ चुका है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी हरिवंश की वापसी के संकेत पहले ही दे दिए थे। 18 मार्च को बजट सत्र के दौरान उनके विदाई समारोह में प्रधानमंत्री ने कहा था कि हरिवंश की राजनीतिक यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है। उस वक्त दिए गए इस बयान को अब इस मनोनयन के संदर्भ में देखा जा रहा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शीर्ष नेतृत्व पहले से ही उनकी वापसी की योजना बना चुका था।

संविधान के प्रावधानों के अनुसार, राज्यसभा में राष्ट्रपति द्वारा 12 सदस्यों को मनोनीत किया जा सकता है। ये सदस्य आमतौर पर कला, साहित्य, विज्ञान, समाज सेवा या अन्य क्षेत्रों में विशेष योगदान देने वाले प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं। हरिवंश का मनोनयन इसी संवैधानिक व्यवस्था के तहत किया गया है, जो उनके सार्वजनिक जीवन में योगदान और अनुभव को मान्यता देने का संकेत भी है।

अब सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि क्या हरिवंश एक बार फिर राज्यसभा के उपसभापति बन सकते हैं। उनके अनुभव, कार्यशैली और सदन संचालन की क्षमता को देखते हुए यह संभावना काफी प्रबल मानी जा रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि सत्तारूढ़ पक्ष और सहयोगी दलों का समर्थन उन्हें मिलता है, तो वे एक बार फिर इस महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो सकते हैं।

हरिवंश की छवि एक सुलझे हुए, शांत और निष्पक्ष नेता की रही है। पत्रकारिता से राजनीति में आए हरिवंश ने अपने कार्यकाल के दौरान सदन में संतुलन बनाए रखने की कोशिश की और कई बार कठिन परिस्थितियों में भी संयमित तरीके से सदन का संचालन किया। यही कारण है कि उन्हें सभी दलों के बीच एक स्वीकार्य चेहरा माना जाता है।

इस मनोनयन ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय राजनीति में अनुभव और संतुलित नेतृत्व को आज भी महत्व दिया जाता है। हरिवंश की वापसी न केवल उनके व्यक्तिगत करियर के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह राज्यसभा की कार्यप्रणाली और राजनीतिक संतुलन के लिए भी अहम मानी जा रही है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि हरिवंश इस नई भूमिका में किस तरह अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं और क्या वे एक बार फिर उपसभापति के रूप में सदन की कमान संभालते हैं। फिलहाल, उनकी वापसी ने राजनीतिक हलकों में नई चर्चाओं और संभावनाओं को जन्म दे दिया है, जो आने वाले दिनों में और स्पष्ट होती नजर आएंगी।

संपादकीय

घातक किशोर अपराध

बदलते वक्त के साथ समाज में बढ़ते आक्रामक व्यवहार के चलते अपराधों का ग्राफ भी तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन किशोरों की अपराधों में संलिप्तता बढ़ना गंभीर चिंता का विषय है। हाल के दिनों में देश में किशोर अपराधों से जुड़ी अनेक ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने देश को गहरी चिंता में डाला है। जो बाल अपराधों के सामाजिक कारणों पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत पर बल देता है। निस्संदेह, यह विचारणीय प्रश्न है कि छोटे-छोटे विवादों के बीच किशोर हिंसक क्यों हो रहे हैं। जिसकी परिणति अकसर क्रूर हत्या के रूप में सामने आती है। पिछले दिनों दिल्ली के दयालपुर क्षेत्र में सिर्फ चार सौ रुपये के विवाद में एक युवक की निर्मम हत्या डराने वाली है। वहीं किशोरों में कानून का भय न होना गंभीर मसला है। बताया जाता है कि इस युवक की हत्या में तीन नाबालिग संलिप्त थे। इस घटना में तीन किशोर एक युवक पर लगातार चाकू मारते रहे। हिंसक प्रवृत्ति की पराकाष्ठा देखिए कि इनका चौथा साथी बाकायदा मोबाइल पर घटना का वीडियो बनाता रहा। निस्संदेह, यह घटना किसी भी सभ्य समाज में सिहरन पैदा करने वाली है कि किशोर में यह आपराधिक दुस्साहस कहां से आ रहा है। जाहिर बात है कि इन किशोरों में पुलिस-प्रशासन का कोई भय नहीं था, तभी वे सरेआम चाकूबाजी करते रहे। देश की राष्ट्रीय राजधानी जहां के बारे में अकसर कहा जाता है कि पुलिस प्रशासन कानून व्यवस्था बनाने में अग्रणी रहता है, वहां यह घटना सामने आयी। सवाल उठाया जा सकता है कि देश के दूर-दराज के इलाकों में यह स्थिति कितनी गंभीर हो सकती है। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि किशोरों की आपराधिक घटनाओं में तेजी से बढ़ती भूमिका की असली वजह क्या है? उल्लेखनीय है कि दयालपुर की घटना से पहले भी कई गंभीर अपराधों में किशोरों की संलिप्तता की घटनाएं गाहे-बगाहे सामने आती रही हैं। लेकिन किशोर अपराध से जुड़े कानून उन्हें जल्दी रिहा करा देते हैं।

दरअसल, देश में अकसर किशोरों के गंभीर अपराधों में लिप्त होने के चलते उनकी वयस्क होने की उम्र घटाने की मांग होती है। इसकी वजह यह है कि किशोर गंभीर अपराधों में संलिप्तता के बावजूद किशोर अपराध से जुड़े कानूनों के लचीलेपन के चलते जेल से जल्दी रिहा हो जाते हैं। जेल से बाहर आने के बाद फिर दूसरे गंभीर अपराधों में लिप्त हो जाते हैं। यह गंभीर मुद्दा है जिसके समाधान को केंद्र सरकार को अपनी प्राथमिकता बनाना चाहिए। दरअसल, इंटरनेट के तेजी से प्रसार और सोशल मीडिया में अपराधों से जुड़ी घातक सामग्री की उपलब्धता किशोरों में भटकाव को बढ़ावा दे रही है। हिंसक फिल्में और अन्य माध्यमों में अपराध के तौर-तरीके से जुड़ी सामग्री किशोर मन पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। देश में संयुक्त परिवारों के बिखराव व बच्चों पर मां-बाप का नियंत्रण कम होने से कई किशोर बुरी संगति के चलते अपराधजगत की फिसलन में उतर जाते हैं। दूसरी ओर स्कूल-कालेजों में शिक्षकों की वह भूमिका नहीं रही, जो सख्ती से किशोरों के व्यवहार को नियंत्रित कर सके। आज उनकी सोच को मोबाइल व सोशल मीडिया पर प्रसारित विकृत सूचनाएं प्रभावित कर रही हैं। समाज के व्यवहार में एक किस्म की आक्रामकता नजर आती है। वहीं दूसरी ओर आपराधिक गिरोह व गैंग भी अपने आपराधिक कृत्यों को अंजाम देने कि लिए किशोरों का इस्तेमाल करते हैं। सवाल यह भी है कि किशोरों तक घातक हथियार कहां से और कैसे पहुंच रहे हैं। वहीं दूसरी ओर, नशे की दलदल में फंसने वाले किशोर भी कालांतर नशा खरीदने के लिये पैसे जुटाने के लिये अपराध की गली में उतर जाते हैं। फिर गंभीर अपराधों को अंजाम देने लगते हैं। निश्चित रूप से बदलते वक्त के साथ पुलिस की भूमिका व कार्यशैली में बदलाव लाने की जरूरत है। साथ ही समाज में भी जागरूकता लानी आवश्यक है ताकि किशोरों को अपराध की राह पर बढ़ने से रोका जा सके। सरकार और समाज के साझे प्रयासों से ही इस संकट से उबरने में मदद मिल सकती है।

शांति समझौते के लिए पर्दे के पीछे तुर्किये-चीन

> खाड़ी युद्ध टालने के लिए युद्धरत देशों को समझौता वार्ता की टेबल तक पहुंचाने का श्रेय पाक लेने की कोशिश में है। लेकिन हकीकत यह है कि इतनी जबरदस्त नेटवर्किंग अकेले पाक लीडरशिप के बस की नहीं थी। इस शांति प्रयासों में चीन, तुर्किये, अरब देशों तथा यूरोपीय नेताओं की बड़ी भूमिका रही है।

पाकिस्तान ने शांति समझौते का एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म मुहैया कराया है, जिसमें तीनों पक्ष विजयी भाव से सीना ताने दुनिया के समक्ष खड़े हैं। बुधवार रात नेतन्याहू ने कहा, 'काम अभी अधूरा है, अभी और भी लक्ष्य पूरे करने हैं, हम उन्हें हासिल करेंगे—चाहे समझौते से, या फिर से लड़ाई शुरू करके। हमारी उंगली ट्रिगर पर है।' ईरान ने भी विजयी भाव से कहा कि हमारी भी उंगलियां ट्रिगर पर है, कभी भी दबा देंगे। दुनिया यही मान रही है कि 39 दिनों से चल रहा युद्ध खत्म हो गया। लेकिन, पिक्चर अभी बाक़ी है। शांति समझौते से अलग, एक और चौगुटा बैठक तुर्किये, सऊदी अरब, पाकिस्तान और मिस्र के विदेशमंत्री कर रहे हैं।

पाकिस्तान ने कैसे वाशिंगटन और तेहरान का भरोसा जीता? पाक पावर कॉरिडोर के लोग बताते हैं, 'ईरान पर पहले हमले हुए, तो विदेश मंत्री इशाक डार, जो उप-प्रधानमंत्री भी हैं, सऊदी अरब में थे, और 'ऑर्गेनाइज़ेशन ऑफ़ इस्लामिक कोऑपरेशन' की एक बैठक में हिस्सा ले रहे थे। डार ने अराघची को फ़ोन करके अपनी एकजुटता ज़ाहिर की।' इस्लामाबाद स्थित सनोबर इंस्टिट्यूट के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर कमर चीमा ने बताया, 'जब पाकिस्तान ने अमेरिकी हमलों की निंदा की, तो उसी पल उसने ईरानियों का भी दिल जीत लिया। पाकिस्तान ने जैसे स्वीकार किया, कि अमेरिकी हस्तक्षेप के बाद हमने भारत से युद्ध रोक लिया, ट्रंप हम पर फ़िदा हो गए।'

सर्वोच्च नेता अली ख़ामेनई की हत्या के बाद कराची में 1 मार्च को प्रदर्शनकारियों ने अमेरिकी दूतावास में घुसने की कोशिश की, जिसमें कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई। वहां की शिया मुस्लिम आबादी, जो पाकिस्तान की 25 करोड़ की आबादी का 15 से 20 प्रतिशत है, इस पूरे घटनाक्रम पर बारीकी से नज़र रखे हुए थी। जैसे-जैसे सांप्रदायिक तनाव बढ़ा, मुनीर ने शिया धर्मगुरुओं को रावलपिंडी बुलाया, और चेतावनी दी, कि पाकिस्तान के भीतर किसी भी तरह की हिंसा बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यह दीगर है कि शिया इस्माइली मुसलमानों के आध्यात्मिक गुरु प्रिंस रहीम अल-हुसैनी ने भारत-पाकिस्तान के शासन प्रमुखों को मेल किया था, कि वो चाहें तो तेहरान में सुलह का प्रयास कर सकते हैं। प्रिंस रहीम अल-हुसैनी के अलावा तीन और शिया धर्मगुरुओं को तेहरान से विश्वास बहाली के वास्ते एक्टिवेट किया गया। इनमें शिया उलेमा काउंसिल के नेता सैयद साजिद अली नक़वी, दूसरे शिया इमाम अल्लामा नज़ीर अब्बास तकवी, और 'तहरीक-ए-नफ़ाज़-ए-फ़िक़्ह-ए-जाफरिया' के प्रमुख, हुसैन मुक़द्दसी का नाम आया है।

बहरहाल, होर्मुज़ जलडमरूमध्य उन शर्तों के साथ फिर से खोलने की कोशिश है, जिनके तहत ईरान और ओमान ट्रांज़िट फ़ीस वसूल सकेंगे। अभी बहुत कुछ तय होना बाक़ी है, जिसमें लेबनान का सवाल भी है। ठीक से देखा जाये, तो इस पूरे शांति प्रयासों में पाकिस्तान प्यादा भर है, असल गोट तुर्किये के राष्ट्रपति रिज़प तय्यिप एर्दोआन, चीनी राष्ट्रपति शी, और यूरोपीय नेता खेल रहे थे। ट्रंप के दामाद जेरेड कुशनर को युद्धविराम के प्रयासों में एक प्रमुख वार्ताकार के रूप में देखा जा रहा है, जो विशेष दूत स्टीव विटकॉफ के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

इस्लामाबाद में शुक्रवार को अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के साथ औपचारिक बातचीत का नेतृत्व संभवतः उपराष्ट्रपति जेडी वेंस करेंगे, जिनके साथ ट्रंप के दूत स्टीव विटकॉफ़ और दामाद जेरेड कुशनर भी होंगे। कुशनर पहले भी ईरान के साथ बातचीत में शामिल रहे थे। 28 फरवरी को शुरू युद्ध में अमेरिका और इस्राइल ने मिलकर ईरान पर हमले किए, जिनमें सुप्रीम लीडर अली खामेनेई समेत कई शीर्ष नेतृत्व वाले मारे गए. ईरान के सैन्य और परमाणु ठिकानों को निशाना बनाया गया। इस युद्ध ने 3500 से ज़्यादा लोगों की जान ले ली है, दुनिया की तेल सप्लाई के लगभग पांचवें हिस्सा अवरुद्ध हो गया। इस बिन बुलाये युद्ध की वजह से भारत की अर्थव्यवस्था चरमरा चुकी है। अंकारा विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की सहायक प्रोफेसर, बेतुल डोगन-अक्कास ने कहा कि पाकिस्तान के दोनों पक्षों के साथ अच्छे संबंध होने के कारण, वह मध्यस्थ की भूमिका के लिए एक स्वाभाविक पसंद बन गया। यह हफ़्तों की कड़ी कूटनीति का नतीजा है; ऐसी कूटनीति जिसके बारे में बहुत कम लोगों को यकीन था, कि पाकिस्तान कर पाएगा। अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की, कि 22 से 23 मार्च के बीच, मुनीर ने सीधे तौर पर ट्रंप से बात की थी। 29 मार्च को, पाकिस्तान, सऊदी अरब, तुर्किये और मिस्र के विदेश मंत्री इस्लामाबाद में फिर से मिले। बैठक से पहले, शरीफ़ ने पेज़ेश्कियन के साथ लंबी बातचीत की; पांच दिनों में यह उनकी दूसरी बातचीत थी। बातचीत के बाद, डार पेइचिंग गए, जो चीन की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है। उन्होंने चीनी विदेश मंत्री वांग यी से मुलाक़ात की, और दोनों पक्षों ने एक पांच-सूत्री रूपरेखा तैयार की, जिसमें युद्धविराम, शीघ्र बातचीत, नागरिकों की सुरक्षा, होर्मुज़ जलडमरूमध्य के रास्ते जहाज़ सेवाओं की बहाली, और संयुक्त राष्ट्र की बड़ी भूमिका शामिल थी।' जिन नेताओं से संपर्क किया गया, उनमें फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्त्ज़, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर, स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज़ और इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी शामिल थे। पाकिस्तान की लीडरशिप ने खाड़ी और मुस्लिम जगत के नेताओं से भी बात की, जिनमें कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी, यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन ज़ायेद अल नाहयान और सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान शामिल थे। तुर्की ने नाटो के महासचिव मार्क रुटे और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला फ़ोन देयर लेयेन से संपर्क किया गया; यह पश्चिमी सहयोगियों के साथ समन्वय को दर्शाता है। अंकारा के सूत्र बताते हैं, 'एर्दोआन ने कुवैत के अमीर शेख मिशाल अल-अहमद अल-जाबेर अल-सबाह, मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम, अज़रबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव, इराकी कुर्द क्षेत्रीय सरकार के राष्ट्रपति नेचिरवान बरज़ानी, यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की, सूडान की संप्रभुता परिषद के प्रमुख अब्देल फत्ताह अल-बुरहान, ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो और कज़ाकिस्तान के राष्ट्रपति कसीम-जोमार्ट टोकायेव के साथ भी बातचीत की थी।' इतनी ज़बरदस्त नेटवर्किंग अकेले पाक लीडरशिप के बस की नहीं थी. इस शांति प्रयासों में जितने विश्व नेताओं से संपर्क किये गए, उसका एक और लक्ष्य निर्धारित था, 'जो भी संवाद हो, माइनस मोदी होना चाहिए।' चीनी राष्ट्रपति शी ने भी नहीं चाहा, कि पीएम मोदी से मशविरा किया जाये। सवाल है, पलट चुकी परिस्थितियों में भारत की भूमिका क्या होनी चाहिए? एक ट्रम्प कार्ड है नेतन्याहू। वो चाहें तो पीएम मोदी का नाम भी शांति प्रयासों के वास्ते सुझा सकते हैं। लेकिन, नेतन्याहू ऐसा करेंगे क्या? या फिर भारत, ख़ामोशी से सब कुछ देखता रहे!

प्रेरणा

माटी की महक: जन्मभूमि का प्रेम और आत्मा का अटूट संबंध

जब भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण को लंका जाकर विभीषण का राजतिलक करने का आदेश दिया, तब यह घटना केवल एक राजकीय परंपरा का निर्वहन नहीं थी, बल्कि जीवन के गहरे सत्य को उजागर करने वाली एक महत्वपूर्ण यात्रा भी थी। लक्ष्मण आज्ञा का पालन करते हुए लंका पहुंचे, और वहां पहुंचते ही उनकी दृष्टि उस स्वर्ण नगरी की अद्भुत भव्यता पर ठहर गई। चारों ओर सोने से बने महल, कलात्मक वास्तुकला, और सुसज्जित उद्यानों की छटा ऐसी थी मानो स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आया हो।

लंका की वाटिकाएं विशेष रूप से मन मोह लेने वाली थीं। रंग-बिरंगे पुष्पों की कतारें, उनकी मधुर सुगंध, और वातावरण में फैली सौंदर्य की अनुभूति लक्ष्मण के मन को कुछ क्षणों के लिए बांधने लगी। वे उन पुष्पों को निहारते रहे, मानो प्रकृति का कोई अद्भुत रहस्य उनके सामने खुल रहा हो। यह आकर्षण स्वाभाविक था, क्योंकि भौतिक सौंदर्य और वैभव मनुष्य को सहज ही अपनी ओर खींच लेते हैं।

विभीषण का विधिपूर्वक राजतिलक संपन्न करने के बाद जब लक्ष्मण वापस श्रीराम के पास लौटे, तो उनके मन में लंका के प्रति एक विशेष आकर्षण बना हुआ था। उन्होंने विनम्र भाव से श्रीराम के चरणों की सेवा करते हुए कहा कि लंका अत्यंत सुंदर और समृद्ध नगरी है, और यदि अनुमति मिले तो वे कुछ समय वहां निवास करना चाहेंगे। यह निवेदन एक साधारण इच्छा नहीं थी, बल्कि उस मोह का प्रतीक था जो मनुष्य को बाहरी वैभव के प्रति हो जाता है।

श्रीराम ने लक्ष्मण की बात को ध्यान से सुना और उनके मन की स्थिति को समझ लिया। उन्होंने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया कि यह सत्य है कि लंका स्वर्ग के समान सुंदर है, लेकिन अपनी जन्मभूमि अयोध्या का महत्व उससे कहीं अधिक है। उन्होंने समझाया कि जहां मनुष्य का जन्म होता है, उस भूमि की मिट्टी में एक विशेष सुगंध होती है, जिसे कोई भी अन्य स्थान नहीं दे सकता।

यह सुगंध केवल मिट्टी की खुशबू नहीं होती, बल्कि उसमें जीवन के अनुभव, संस्कार, और भावनात्मक जुड़ाव की गहराई समाहित होती है। जन्मभूमि वह स्थान होती है जहां व्यक्ति ने अपने जीवन की पहली सांस ली, जहां उसने अपने माता-पिता का स्नेह पाया, और जहां उसके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। इसलिए उस भूमि का महत्व केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और भावनात्मक भी होता है।

लक्ष्मण ने जब श्रीराम के इन वचनों को सुना, तो उनके मन का भ्रम दूर हो गया। उन्हें यह अनुभूति हुई कि बाहरी आकर्षण क्षणिक होता है, जबकि जन्मभूमि का प्रेम स्थायी और गहरा होता है। उन्होंने स्वीकार किया कि अयोध्या वास्तव में तीनों लोकों से न्यारी है, क्योंकि वहां केवल भौतिक सुंदरता ही नहीं, बल्कि आत्मिक शांति और अपनेपन का अनुभव भी मिलता है।

यह प्रसंग हमें यह सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी प्रगति क्यों न हो जाए, चाहे हम कितनी भी दूर क्यों न चले जाएं, अपनी जन्मभूमि के प्रति हमारा संबंध कभी समाप्त नहीं होता। आज के युग में जब लोग बेहतर अवसरों की तलाश में अपने घर-परिवार और देश को छोड़कर विदेशों में बस जाते हैं, तब भी उनके हृदय में अपने गांव, अपने शहर, और अपनी मिट्टी के प्रति एक गहरा प्रेम बना रहता है।

जन्मभूमि की महक एक ऐसी अनुभूति है जो केवल महसूस की जा सकती है, उसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह उस बचपन की यादों में बसती है, जब हम बिना किसी चिंता के खेलते थे। यह उस वातावरण में घुली होती है, जहां हमारे पहले सपने आकार लेते हैं। यह उन लोगों के स्नेह में छिपी होती है, जिन्होंने हमें जीवन की राह दिखायी।

जब कोई व्यक्ति अपनी जन्मभूमि से दूर होता है, तब उसे उसकी असली कीमत समझ में आती है। वह वहां की छोटी-छोटी बातों को याद करता है—गली-कूचों की चहल-पहल, त्योहारों की रौनक, और अपनों का साथ। ये सभी चीजें मिलकर एक ऐसा अनुभव देती हैं, जिसे कोई भी भौतिक संपत्ति प्रतिस्थापित नहीं कर सकती।

श्रीराम का यह संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था। यह हमें यह सिखाता है कि हमें अपनी जन्मभूमि का सम्मान करना चाहिए, उसके प्रति गर्व महसूस करना चाहिए, और उसके विकास में योगदान देना चाहिए। क्योंकि अंततः वही भूमि हमें हमारी पहचान देती है और हमें हमारे मूल से जोड़ती है।

आज जब वैश्वीकरण के इस युग में लोग दुनिया के विभिन्न कोनों में जा रहे हैं, तब यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी जड़ों को न भूलें। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारी वास्तविक शक्ति और पहचान हमारी जन्मभूमि से ही आती है। वही हमें स्थिरता देती है, वही हमें दिशा देती है, और वही हमें यह सिखाती है कि हम कौन हैं।

इस प्रकार, लक्ष्मण का लंका के प्रति आकर्षण और श्रीराम द्वारा दिया गया उपदेश हमें जीवन का एक गहरा और अमूल्य सत्य सिखाता है—कि चाहे संसार कितना भी आकर्षक क्यों न हो जाए, अपनी जन्मभूमि की महत्ता उससे कहीं अधिक होती है। उसकी माटी की महक, उसका अपनापन, और उसका आत्मिक संबंध हमें जीवन भर एक अदृश्य डोर से बांधे रखता है।

जहां से हुआ था भारत पर कब्जा, ट्रेड रूट बंद करना था कारण, Strait of Hormuz की ये कहानी क्या आपको पता है?

ईरान अब स्टेट ऑफ हॉर्मोस के मैनेजमेंट को नए स्तर पर ले जाएगा। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्ला अली खामिनई की मौत के बाद देश में 40 दिनों का शोक था। 9 अप्रैल को 40 दिन पूरे हुए और इसी दिन नए सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई का मैसेज टीवी पर ब्रॉडकास्ट हुआ। उन्होंने यह साफ किया है कि स्टेट ऑफ हॉर्मोस का मैनेजमेंट अब नई तरह से होगा और यह बदलाव खुद ईरान करेगा। मुस्तफा खामेनई के इस मैसेज से पहले भी ईरान इस बात का संकेत दे चुका है कि स्टेट ऑफ हॉर्मोस अब पहले जैसा नहीं होगा। नए स्टेटमेंट से यह और भी क्लियर हो चुका है कि ईरान अब कंट्रोल के साथ-साथ उसका मैनेजमेंट भी बहुत मजबूत करने वाला है। इसकी तैयारी में है। यह भी आशंका जताई जा रही है कि ईरान स्टेट ऑफ हॉर्मोस को लेकर और कड़े प्रतिबंध जारी कर सकता है। मोजतबा ने ईरान की जनता से एकजुट रहने और ऐसे मीडिया आउटलेट से दूर रहने की सलाह दी है जो अमेरिका या इजराइल को सपोर्ट करते दिखे। उन्होंने कहा, भले ही 40 दिनों का शोक पूरा हो गया है, लेकिन दुश्मन से बदला लेने का जज्बा खत्म नहीं होना चाहिए। ईरान जंग नहीं चाहता, लेकिन वह अपने अधिकारों को नहीं छोड़ेगा। ईरान अपने मरहूम सुप्रीम लीडर अली खामिनई और अपने शहीदों का बदला लेने के लिए पक्का इरादा रखता है। ईरान अभी भी अपने साउथ के पड़ोसियों से एक सही रिएक्शन का इंतजार कर रहा है ताकि वह अपना भाईचारा दिखा सके। साल 1498 वास्कोडि गामा अपने जहाजों के साथ भारत के तट पर पहुंचे। कालीकट जो आज केरल में कोजीकोट है। यह पहली बार था कि कोई यूरोपियन समुद्री रास्ते से भारत पहुंचा था। अफ्रीका केप ऑफ गुड होप को पार करते हुए उस जमाने में भारत से आने वाले मसाले यूरोप में सोने जितने कीमती थे। काली मिर्च, लौंग, दालचीनी, जायफल यह सब चीजें भारत से अरब व्यापारियों के जरिए जमीनी रास्ते से पहले फारस की खाड़ी या लाल सागर तक जाती थी। फिर वहां से मिस्र और इटली के वेनिस शहर तक। वेनिस के व्यापारी इन मसालों को पूरे यूरोप में बेचते थे। इस पूरी सप्लाई चेन में अरब व्यापारी और वेनिस के सौदागर बिचोलिए थे और यह बिचोलिए इतना मुनाफा कमाते थे कि जब तक मसाले यूरोप पहुंचते उनकी कीमत कई गुना बढ़ चुकी होती थी। वास्कोडिगामा की यात्रा ने पुर्तगाल की राजधानी लिसबन को एक आईडिया दिया। लिसबन को यह समझ आ गया कि अगर वह समुद्री रास्ते पर कंट्रोल कर ले तो बिचौलियों को काटकर सीधे मसालों का व्यापार किया जा सकता है। और इसके लिए उसे जमीन पर राज करने की जरूरत भी नहीं है। बस समुद्र के कुछ अहम ठिकानों पर कब्ज़ा चाहिए था। पुर्तगाल के राजा मैनुअल ने 1505 में एक प्लान बनाया और इस प्लान में तीन जगहें थी। पहला अदन जो लाल सागर के मुहाने पर है ताकि मिस्र और अलेक्जेंड्रिया जाने वाले व्यापार को रोका जा सके। दूसरा था होर्मुज जो फारस की खाड़ी के मुहाने पर है ताकि बैरूद और फारस जाने वाला रास्ता बंद हो और तीसरा मलक्का जो आज के मलेशिया में है ताकि चीन के साथ होने वाले व्यापार पर कंट्रोल हो सके। तीनों जगह समुद्री रास्तों के चोक पॉइंट थी। मतलब ऐसे तंग रास्ते जहां से होकर गुजरे बिना कोई जहाज आगे नहीं जा सकता। इन तीनों पर कब्जा करो तो हिंद महासागर का पूरा व्यापार तुम्हारे हाथ में। और इन तीनों में सबसे अहम था होर्मुज। होर्मुज एक छोटा सा टापू है फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी के बीच। आज यह ईरान का हिस्सा है। लेकिन उस जमाने में यह एक अलग छोटी सी सल्तनत थी जिसका अपना राजा था। यह राजा सफाविद ईरान के शाह इस्माइल को टैक्स देता था। हॉर्मूस उस वक्त दुनिया के सबसे अमीर व्यापारिक ठिकानों में से एक था और एक फारसी कहावत थी कि अगर दुनिया एक अंगूठी है तो होर्मुज उसमें जड़ा हीरा है और इसकी वजह भी थी कि यहां से बहुत सारी चीजें गुजरती थी। भारत से आने वाले मसाले, कपड़े, इंडोनेशिया से आने वाली लौंग और जायफल, फारस से जाने वाला रेशम, बहरीन से आने वाली मोती और सबसे जरूरी अरब और फारस से भारत जाने वाले युद्ध के घोड़े। यह घोड़े वाला हिस्सा बहुत अहम है क्योंकि इसका संबंध सीधे भारत से है। उस जमाने में भारत के दक्कन में कई सल्तनतें थी। बहमनी सल्तनत जो बाद में पांच छोटी सल्तनतों में बंट गई और विजयनगर साम्राज्य इन सबको लड़ाई के लिए अच्छी नस्ल के घोड़े चाहिए थे। भारत में जो देसी नस्ल के घोड़े मिलते थे, वह दक्कन की भीषण गर्मी में भारी भक्तबंद सिपाही को लेकर ज्यादा देर तक नहीं दौड़ सकते थे। अरबी और फारसी घोड़े इस काम के लिए कहीं बेहतर थे। तो भारत के राजा भारी कीमत देकर अरब और फारस से घोड़े मंगाते थे। पुर्तगाली व्यापारी नूनीस ने लिखा है कि 16वीं सदी के पहले हिस्से में विजयनगर का राजा हर साल होर्मुज के रास्ते से करीब 13,000 घोड़े इंपोर्ट करता था।

पुर्तगालियों ने हॉर्मूज पर सीधा राज नहीं किया। लोकल राजा अपनी जगह बना रहा लेकिन असली कंट्रोल पुर्तगालियों के पास था। राजा को टैक्स देना होता था। शुरू में सालाना सोने के सिक्के दिए जाते थे। बाद में पुर्तगालियों ने पूरी कस्टम ड्यूटी ही अपने हाथ में ले ली और सबसे अहम चीज थी कार्तताज़ सिस्टम। कार्तताज़ एक तरह का लाइसेंस था या यूं कहें कि समुद्री पासपोर्ट। हिंद महासागर में कोई भी जहाज चलाना हो तो उसे पुर्तगालियों से यह कारतताज़ लेना पड़ता था। । पुर्तगालियों ने हॉर्मूस पर करीब 107 साल राज किया। लेकिन धीरे-धीरे उनकी पकड़ कमजोर होती गई। एक तरफ ऑटोमन साम्राज्य ने में हॉर्मूस पर हमला किया। हालांकि वह हमला नाकाम रहा। दूसरी तरफ सफाविद ईरान के शाह अब्बास जो 1588 से 1629 तक सत्ता में रहे उन्होंने पुर्तगालियों से बहुत नाराजगी रखी। 1615 में बंदर आवास जो हॉर्मूस के सामने सामुद्रिक तट पर था वो भी ले लिया गया। लेकिन हॉर्मूस लेने के लिए शाह अब्बास को नेवी चाहिए थी और सफावेद ईरान के पास मजबूत नेवी नहीं थी। यही एंट्री होती है ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की। अंग्रेज उस वक्त फारस के रेशम के व्यापार में दिलचस्पी रखते थे।

अभियान

मानवता के शाश्वत प्रकाश स्तंभ: महर्षि वाल्मीकि और उनकी अमर वाणी का प्रेरणादायी संदेश

अश्विन मास की पूर्णिमा का दिन भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा में अत्यंत पवित्र और प्रेरणादायी माना जाता है, क्योंकि इसी दिन महर्षि वाल्मीकि की जयंती मनाई जाती है। यह केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि उस महान ऋषि के विचारों, शिक्षाओं और मानवता के प्रति उनके अमूल्य योगदान को स्मरण करने का पावन अवसर है। प्रतिवर्ष यह पर्व श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है, और इस अवसर पर देशभर में अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनका उद्देश्य समाज को सत्य, धर्म और नैतिकता के मार्ग पर प्रेरित करना होता है।

महर्षि वाल्मीकि को संस्कृत साहित्य का 'आदिकवि' कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने ही संसार को पहला महाकाव्य रामायण प्रदान किया। यह ग्रंथ केवल एक धार्मिक कथा नहीं है, बल्कि जीवन के प्रत्येक पहलू को समझाने वाला एक संपूर्ण दर्शन है। इसमें न केवल भगवान श्रीराम के जीवन का वर्णन है, बल्कि उनके आदर्शों, कर्तव्यों और नैतिक मूल्यों का भी गहन चित्रण किया गया है, जो आज भी समाज के लिए मार्गदर्शक हैं।

रामायण को वेदों के समान पूजनीय माना गया है, क्योंकि इसमें जीवन के हर क्षेत्र—धर्म, नीति, राजनीति, समाजशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद और कला—का गूढ़ ज्ञान समाहित है। यह महाकाव्य लगभग चौबीस हजार श्लोकों में रचित है और इसे विश्व की सबसे प्राचीन साहित्यिक कृतियों में गिना जाता है। इसकी विशेषता यह है कि यह केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि आज यह अनेक भाषाओं में अनूदित होकर पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, जो भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान का प्रतीक है।

महर्षि वाल्मीकि का जीवन स्वयं में एक अद्भुत प्रेरणा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, उनका प्रारंभिक नाम रत्नाकर था और वे एक डाकू के रूप में जीवन यापन करते थे। अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए वे लूटपाट करते थे और इसे ही अपना कर्तव्य समझते थे। लेकिन उनके जीवन में एक ऐसा मोड़ आया, जिसने उनकी दिशा और दशा दोनों बदल दी।

एक दिन उनकी भेंट नारद मुनि से हुई। रत्नाकर ने उन्हें बंदी बनाकर लूटने का प्रयास किया, तब नारद मुनि ने उनसे एक ऐसा प्रश्न पूछा, जिसने उनके अंतर्मन को झकझोर दिया। उन्होंने पूछा कि जिनके लिए तुम पाप कर रहे हो, क्या वे तुम्हारे इस पाप में भागीदार बनने को तैयार हैं? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए जब रत्नाकर अपने परिवार के पास गए, तो उन्हें यह जानकर गहरा आघात लगा कि उनके परिवार के सदस्य उनके पापों में भागीदार बनने को तैयार नहीं हैं।

यह अनुभव उनके जीवन का turning point बना। वे वापस लौटे और नारद मुनि के चरणों में गिरकर अपने पापों के लिए प्रायश्चित का मार्ग पूछा। तब नारद मुनि ने उन्हें 'राम' नाम का जाप करने की सलाह दी। प्रारंभ में रत्नाकर के लिए 'राम' नाम लेना कठिन था, इसलिए उन्हें 'मरा-मरा' का जाप करने को कहा गया। निरंतर साधना और तपस्या के परिणामस्वरूप उनका हृदय शुद्ध हुआ और वे एक महान ऋषि के रूप में परिवर्तित हो गए। वर्षों की कठोर तपस्या के दौरान उनके शरीर पर चीटियों ने बांबी बना ली, और इसी कारण उन्हें 'वाल्मीकि' नाम प्राप्त हुआ।

महर्षि वाल्मीकि का यह परिवर्तन यह दर्शाता है कि मनुष्य चाहे कितना भी पापी क्यों न हो, यदि वह सच्चे मन से पश्चाताप करे और धर्म का मार्ग अपनाए, तो वह महानता को प्राप्त कर सकता है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि किसी भी व्यक्ति के लिए सुधार और उत्थान के द्वार हमेशा खुले रहते हैं।

रामायण की रचना भी एक अद्भुत घटना से जुड़ी है। कहा जाता है कि एक बार महर्षि वाल्मीकि ने एक क्रौंच पक्षी के जोड़े को देखा, जिसमें से एक को शिकारी ने मार दिया। इस घटना से उनके हृदय में करुणा और वेदना उत्पन्न हुई, और उसी क्षण उनके मुख से एक श्लोक निकला, जो संस्कृत काव्य का पहला श्लोक माना जाता है। यही से काव्य रचना की शुरुआत हुई और उन्होंने रामायण जैसे महान ग्रंथ की रचना की।

रामायण में न केवल श्रीराम के जीवन का वर्णन है, बल्कि यह मानव जीवन के आदर्शों का भी प्रतिबिंब है। इसमें पिता-पुत्र का संबंध, पति-पत्नी का प्रेम, भाईचारे की भावना, और समाज के प्रति कर्तव्य का गहन चित्रण किया गया है। श्रीराम का चरित्र त्याग, मर्यादा और सत्य का प्रतीक है, जो हर युग में प्रासंगिक है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब श्रीराम ने माता माता सीता का त्याग किया, तब उन्होंने महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में आश्रय लिया। वहीं उन्होंने लव और कुश को जन्म दिया। महर्षि वाल्मीकि ने ही उन्हें शिक्षा और संस्कार दिए, और बाद में लव-कुश ने ही श्रीराम को रामायण की कथा सुनाई। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि महर्षि वाल्मीकि केवल एक कवि ही नहीं, बल्कि एक महान गुरु और समाज सुधारक भी थे।

महर्षि वाल्मीकि की वाणी आज भी मानवता के लिए एक दीपक की तरह है, जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाती है। उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि जीवन में सच्चाई, ईमानदारी और धर्म का पालन ही वास्तविक सफलता का मार्ग है। उन्होंने यह भी बताया कि मनुष्य को अपने कर्मों के प्रति सजग रहना चाहिए और सदैव अच्छे कार्यों की ओर अग्रसर होना चाहिए।

आज के आधुनिक युग में, जब समाज अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब महर्षि वाल्मीकि की शिक्षाएं और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं। उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने भीतर की बुराइयों को पहचानें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें। उनका संदेश यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने अतीत से बंधा नहीं है, बल्कि वह अपने वर्तमान और भविष्य को अपने कर्मों से बदल सकता है।

महर्षि वाल्मीकि जयंती का पर्व हमें यह अवसर देता है कि हम उनके जीवन और शिक्षाओं को आत्मसात करें और अपने जीवन में उनका अनुसरण करें। यह केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और आत्मसुधार का भी अवसर है। यदि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलें, तो न केवल हमारा जीवन बेहतर हो सकता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

इस प्रकार, महर्षि वाल्मीकि की वाणी आज भी मानवता का मार्गदर्शन कर रही है। उनका जीवन और उनके द्वारा रचित रामायण हमें यह सिखाती है कि सत्य, धर्म और करुणा के मार्ग पर चलकर ही हम एक आदर्श जीवन जी सकते हैं। उनका संदेश कालातीत है और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

पीएनबी लोन घोटाले पर सीबीआई कोर्ट का सख्त फैसला: बैंक अधिकारियों सहित 9 दोषी करार, सजा से सिस्टम को मिला कड़ा संदेश

देश की बैंकिंग व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही को लेकर एक महत्वपूर्ण फैसला सामने आया है, जहां पंजाब नेशनल बैंक से जुड़े 2016 के लोन धोखाधड़ी मामले में अहमदाबाद की विशेष सीबीआई कोर्ट ने बड़ा निर्णय सुनाते हुए 9 लोगों को दोषी ठहराया है। इस फैसले ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वित्तीय अनियमितताओं और नियमों की अनदेखी करने वालों के लिए अब कानून का शिकंजा और अधिक कड़ा हो गया है।

यह मामला वर्ष 2011 से शुरू हुई एक सुनियोजित वित्तीय गड़बड़ी से जुड़ा है, जिसमें बैंक के अंदरूनी तंत्र और बाहरी कारोबारी तत्वों की मिलीभगत सामने आई। आरोपियों ने व्यावसायिक विस्तार के नाम पर बैंक से करोड़ों रुपये का ऋण प्राप्त किया, लेकिन इसके लिए जो दस्तावेज प्रस्तुत किए गए, वे जांच में फर्जी पाए गए। इस पूरे प्रकरण ने न केवल बैंक को आर्थिक नुकसान पहुंचाया, बल्कि बैंकिंग प्रणाली की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े किए।

अदालत ने इस मामले में तीन सेवानिवृत्त बैंक अधिकारियों—गुरिंदर सिंह (पूर्व एजीएम), केजीसीएस अय्यर (चीफ मैनेजर) और के.ई. सुरेंद्रनाथ (सीनियर मैनेजर)—को दोषी मानते हुए प्रत्येक को दो-दो साल के कठोर कारावास और एक-एक लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई है। इन अधिकारियों पर आरोप था कि उन्होंने अपने पद की जिम्मेदारियों का निर्वहन ठीक से नहीं किया और बिना पर्याप्त जांच-पड़ताल के फर्जी दस्तावेजों के आधार पर ऋण को मंजूरी दे दी।

इसके अलावा, कारोबारी पक्ष से जुड़े कई लोगों को भी अदालत ने दोषी पाया। मैसर्स जलपा एंटरप्राइज प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक संजय पटेल को तीन साल की सख्त कैद और 50 हजार रुपये के जुर्माने की सजा दी गई है, जबकि हितेश डोमाडिया को भी तीन साल की जेल और एक लाख रुपये के जुर्माने का दंड मिला है। अन्य आरोपियों—सतीश दावरा, वैशाली दावरा और रमीलाबेन भिकाड़िया—को दो-दो साल के कठोर कारावास और 50-50 हजार रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई है। कंपनी पर भी अलग से 50 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है।

इस पूरे घोटाले की जड़ जुलाई 2011 में रखी गई थी, जब मेसर्स काली टेक्सटाइल्स के मालिक शैलेश सतासिया और उनके सहयोगियों ने सूरत स्थित पीएनबी शाखा में 3.70 करोड़ रुपये के टर्म लोन और 40 लाख रुपये की कैश क्रेडिट लिमिट के लिए आवेदन किया था। आवेदन में यह दर्शाया गया था कि यह राशि 44 वाटर जेट लूम मशीनों की खरीद और अन्य व्यावसायिक जरूरतों के लिए उपयोग की जाएगी। बैंक अधिकारियों ने इस प्रस्ताव की सिफारिश की और अंततः इसे मंजूरी दे दी गई।

ऋण के लिए मशीनों को प्राथमिक सुरक्षा के रूप में गिरवी रखा गया था, जबकि अतिरिक्त कोलैटरल के रूप में भूखंड और आवासीय फ्लैट शामिल किए गए थे। लेकिन बाद में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की जांच में यह सामने आया कि इन दस्तावेजों में गंभीर अनियमितताएं थीं और कई दस्तावेज पूरी तरह से फर्जी थे। इसके बावजूद बैंक अधिकारियों ने उचित जांच किए बिना उन्हें स्वीकार कर लिया, जो उनकी लापरवाही और मिलीभगत को दर्शाता है।

जांच एजेंसी के अनुसार, इस धोखाधड़ी के कारण बैंक को ब्याज को छोड़कर लगभग 1.57 करोड़ रुपये का सीधा नुकसान हुआ। यह नुकसान भले ही बड़े बैंकिंग घोटालों की तुलना में छोटा लगे, लेकिन इसने यह दिखाया कि किस तरह छोटे-छोटे स्तर पर होने वाली अनियमितताएं भी संस्थानों को गंभीर क्षति पहुंचा सकती हैं।

अदालत का यह फैसला केवल दोषियों को सजा देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे बैंकिंग सिस्टम के लिए एक चेतावनी भी है। यह स्पष्ट संदेश देता है कि वित्तीय संस्थानों में काम करने वाले अधिकारियों को अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी और सतर्कता के साथ करना होगा। किसी भी प्रकार की लापरवाही या जानबूझकर की गई अनदेखी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के फैसले भविष्य में बैंकिंग क्षेत्र में अनुशासन और पारदर्शिता को बढ़ावा देंगे। इससे न केवल अधिकारियों में जिम्मेदारी का भाव बढ़ेगा, बल्कि आम जनता का भी बैंकिंग प्रणाली पर भरोसा मजबूत होगा। साथ ही, यह निर्णय उन लोगों के लिए भी एक सख्त चेतावनी है जो फर्जी दस्तावेजों के माध्यम से वित्तीय संस्थानों को धोखा देने की कोशिश करते हैं।

यह मामला इस बात का भी उदाहरण है कि किस तरह एक छोटी सी चूक या जानबूझकर की गई लापरवाही बड़े परिणाम ला सकती है। यदि उस समय बैंक अधिकारियों ने उचित जांच-पड़ताल की होती, तो इस धोखाधड़ी को रोका जा सकता था। लेकिन ऐसा न होने के कारण न केवल बैंक को नुकसान हुआ, बल्कि कई लोगों को अब कानूनी सजा का सामना करना पड़ रहा है।

अंततः, यह फैसला भारतीय न्याय प्रणाली की सख्ती और निष्पक्षता को दर्शाता है। यह बताता है कि चाहे मामला कितना भी पुराना क्यों न हो, यदि उसमें सच्चाई और सबूत हैं, तो न्याय अवश्य मिलता है। आने वाले समय में ऐसे फैसले बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि भविष्य में इस प्रकार की घटनाएं दोबारा न हों।

सूरत के केमिकल सेक्टर में बड़ा कदमः SGCCI–केमेक्सिल के बीच 5 साल का MoU, हर साल लगेगा केमिकल एंड फार्मा एक्सपो

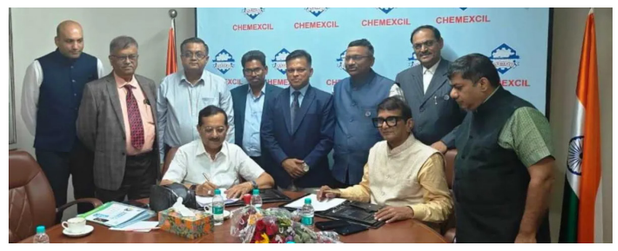

सूरत के औद्योगिक क्षेत्र के लिए शुक्रवार, 10 अप्रैल 2026 का दिन एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में दर्ज हो गया है। दक्षिण गुजरात के व्यापारिक संगठन सदर्न गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री और भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत कार्यरत केमेक्सिल के बीच पांच वर्षों के लिए एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह समझौता न केवल सूरत के केमिकल उद्योग को नई दिशा देगा, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए भी तैयार करेगा। यह MoU मुंबई स्थित केमेक्सिल मुख्यालय में दोनों संस्थाओं के वरिष्ठ पदाधिकारियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। समझौते को सूरत के औद्योगिक विकास की दिशा में एक रणनीतिक कदम माना जा रहा है, जो आने वाले वर्षों में व्यापार, निवेश और तकनीकी सहयोग के नए अवसर खोल सकता है।

इस साझेदारी की सबसे महत्वपूर्ण घोषणा यह है कि अब हर वर्ष सूरत में 'केमिकल एंड फार्मा एक्सपो' का आयोजन किया जाएगा। इस एक्सपो के माध्यम से सूरत के केमिकल और फार्मा उद्योग को राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक अपनी पहुंच बनाने का सीधा अवसर मिलेगा। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि यह प्लेटफॉर्म स्थानीय इकाइयों को वैश्विक खरीदारों, निवेशकों और तकनीकी विशेषज्ञों से जोड़ने में अहम भूमिका निभाएगा।

SGCCI के अध्यक्ष निखिल मद्रासी ने इस अवसर पर कहा कि यह समझौता सूरत के केमिकल सेक्टर को एक नई पहचान दिलाने वाला साबित होगा। उन्होंने बताया कि एक्सपो के जरिए छोटे और मध्यम उद्योगों को भी वैश्विक मंच मिलेगा, जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ेगी और निर्यात के नए रास्ते खुलेंगे। इस MoU के तहत अगले पांच वर्षों में दोनों संगठन कई प्रमुख क्षेत्रों पर मिलकर काम करेंगे। इनमें सबसे अहम है एक्सपोर्ट गाइडेंस, जिसके तहत उद्यमियों को वैश्विक बाजार की नीतियों, मांग और ट्रेंड्स की जानकारी दी जाएगी, ताकि वे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में बेहतर प्रदर्शन कर सकें। इसके अलावा नियमित रूप से सेमिनार, वर्कशॉप और मेंटरिंग प्रोग्राम आयोजित किए जाएंगे, जिससे उद्योगों को तकनीकी और व्यावसायिक मार्गदर्शन मिल सके।

नीतिगत स्तर पर भी यह साझेदारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। दोनों संस्थाएं मिलकर केमिकल सेक्टर से जुड़े पॉलिसी मुद्दों पर सरकार के साथ समन्वय करेंगी, ताकि स्थानीय उद्योगों को आवश्यक सहायता और अनुकूल माहौल मिल सके। इससे न केवल व्यापारिक सुगमता बढ़ेगी, बल्कि निवेश के नए अवसर भी उत्पन्न होंगे।

इस मौके पर चैंबर ऑफ कॉमर्स की ओर से मानद मंत्री बिजल जरीवाला, मानद कोषाध्यक्ष सीए मितिश मोदी, सचिव पॉलिक देसाई और ई.जे. थॉमस मौजूद रहे। वहीं, केमेक्सिल की ओर से चेयरमैन सतीश वाघ, वाइस चेयरमैन अंकित पटेल, डायरेक्टर जनरल रघुवीर किनी और एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर विशाल गंजू ने इस साझेदारी को सूरत के औद्योगिक भविष्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण बताया।

केमेक्सिल के चेयरमैन ने भरोसा जताया कि यह साझेदारी सूरत के केमिकल सेक्टर को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने में निर्णायक भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में इस क्षेत्र में न केवल व्यापार बढ़ेगा, बल्कि नई तकनीक, अनुसंधान और विदेशी निवेश के रास्ते भी खुलेंगे।

विशेषज्ञों का मानना है कि सूरत पहले से ही देश के प्रमुख केमिकल और टेक्सटाइल हब के रूप में जाना जाता है, और यह MoU इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत औद्योगिक केंद्र के रूप में स्थापित करने में मदद करेगा। एक्सपो और निर्यात प्रोत्साहन गतिविधियों के जरिए स्थानीय उद्योगों को वैश्विक पहचान मिलने की संभावना और भी मजबूत हो गई है।

कुल मिलाकर, यह समझौता सूरत के औद्योगिक विकास के लिए एक नई शुरुआत माना जा रहा है, जो आने वाले वर्षों में शहर की आर्थिक तस्वीर को और अधिक मजबूत और प्रतिस्पर्धी बना सकता है।

श्री रामाश्रय पाण्डेय ने पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक का कार्यभार ग्रहण किया

भारतीय रेल इंजीनियर्स सेवा (IRSE) के 1990 बैच के वरिष्ठ अधिकारी श्री रामाश्रय पाण्डेय ने शुक्रवार, 10 अप्रैल, 2026 को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक का कार्यभार ग्रहण किया। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक के रूप में अपनी नियुक्ति से पहले आप पूर्व मध्य रेलवे, पटना में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण/दक्षिण) के पद पर कार्यरत थे।

अपने उत्कृष्ट कैरियर के दौरान श्री पाण्डेय ने उत्तर पूर्व रेलवे के वाराणसी मंडल में मंडल रेल प्रबंधक (DRM) के रूप में तथा उत्तर रेलवे, नई दिल्ली में मुख्य इंजीनियर के पद पर कार्य किया है। आपने गोरखपुर एवं समस्तीपुर में उप मुख्य इंजीनियर, रेलवे बोर्ड में सदस्य इंजीनियरिंग के विशेष कार्याधिकारी (OSD), रेलवे बोर्ड में निदेशक सतर्कता तथा हाजीपुर में उप मुख्य सतर्कता अधिकारी सहित अनेक महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दी हैं। आप रेल विकास निगम लिमिटेड (RVNL) में ग्रुप जनरल मैनेजर के रूप में भी कार्यरत रहे, जहाँ आपने कई महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना परियोजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया।

श्री पाण्डेय आईआईटी रुड़की से बी.टेक. तथा आईआईटी दिल्ली से एम.टेक. की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं। रेल परिचालन तथा आधारभूत संरचना प्रबंधन के क्षेत्रों में श्री पाण्डेय ने व्यापक अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपने इटली में ट्रैक रिकॉर्डिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया, सिंगापुर एवं मलेशिया में एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम पूरा किया, स्पेन में हाई-स्पीड ट्रेन परिचालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा तुर्की एवं नॉर्वे में सुरंग निर्माण तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

श्री पाण्डेय को आधारभूत संरचना के निर्माण तथा प्रबंधन एवं प्रशासन का व्यापक अनुभव प्राप्त है। आप अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच समान रूप से लोकप्रिय हैं और पूर्ण विश्वास है कि आपके गतिशील नेतृत्व में पश्चिम रेलवे नई उपलब्धियाँ हासिल करते हुए नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी।

वडोदरा मंडल द्वारा 2.722 MWp क्षमता के सोलर संयंत्र की स्थापना से होगी प्रतिवर्ष 2.92 करोड़ की बचत

भारतीय रेल की हरित ऊर्जा नीति के अनुरूप पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल सौर ऊर्जा के उपयोग को निरंतर बढ़ाते हुए ऊर्जा दक्षता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के मार्गदर्शन में वडोदरा मंडल के विद्युत विभाग द्वारा कुल 2.722 मेगावाट पीक (MWp) क्षमता के रूफटॉप सोलर संयंत्र स्थापित किए गए। इन सौर संयंत्रों के परिणामस्वरूप मंडल को प्रतिवर्ष लगभग 2.92 करोड़ की बचत होगी, जो ऊर्जा लागत के अनुकूलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (पावर) श्री प्रदीप मीणा ने बताया कि यह पहल पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इन संयंत्रों से प्रतिवर्ष लगभग 3.64 मिलियन यूनिट सौर ऊर्जा का उत्पादन होगा, जिससे ऊर्जा उपयोग की दक्षता में उल्लेखनीय सुधार होगा। साथ ही, मानक ग्रिड उत्सर्जन कारक के आधार पर इन संयंत्रों से लगभग 2632 टन CO उत्सर्जन में कमी आंकी जाएगी। 25 वर्षों की अनुमानित आयु अवधि में लगभग 65,800 टन CO उत्सर्जन से बचाव किया जा सकेगा।

उन्होंने बताया कि विद्युत विभाग (पावर) मंडल में रेलवे स्टेशनों, सेवा भवनों एवं परिसरों पर रूफटॉप सोलर संयंत्रों की स्थापना के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा दे रहा है, जिससे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता में कमी लाई जा रही है। मंडल के विभिन्न प्रमुख स्थलों, जैसे वडोदरा स्टेशन परिसर, विद्युत लोको शेड तथा अंकलेश्वर स्टेशन सहित अन्य सेवा भवनों पर सौर संयंत्र स्थापित किए गए हैं। वडोदरा स्टेशन पर रनिंग रूम, टीटीई रेस्ट रूम, रिटायरिंग रूम, आरआरआई, लॉबी एवं कार्यालय भवनों की छतों का उपयोग करते हुए सौर ऊर्जा उत्पादन सुनिश्चित किया गया है। इसी प्रकार लोको शेड एवं अन्य परिसरों में भी उपलब्ध अवसंरचना का प्रभावी उपयोग किया गया है।

वडोदरा मंडल भविष्य में भी सौर ऊर्जा क्षमता के विस्तार एवं ऊर्जा दक्षता उपायों के क्रियान्वयन के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा उपयोग को और बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। सुनियोजित कार्यान्वयन एवं सतत निगरानी के साथ मंडल एक ऊर्जा-कुशल, किफायती एवं पर्यावरण-अनुकूल रेलवे प्रणाली के निर्माण की दिशा में अग्रसर है।

बुलेट ट्रेन परियोजना के अंतर्गत अहमदाबाद मण्डल से चलने/गुजरने वाली ट्रेनें प्रभावित

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्री सुविधाओं के उन्नयन एवं रेलवे अवसंरचना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से बुलेट ट्रेन परियोजना के अंतर्गत गेरतपुर–अहमदाबाद खंड पर प्रीकास्टेड पोर्टल बीम की स्थापना हेतु दिनांक 13 अप्रैल 2026 को प्रातः 10:15 बजे से 13:45 बजे तक (03 घंटे 30 मिनट) ट्रैफिक ब्लॉक लिया जाएगा। जिसके कारण निम्नलिखित ट्रेनें प्रभावित रहेगी।

शॉर्ट टर्मिनेशन / ओरिजिनेशन ट्रेनें

▸▸ट्रेन संख्या 20901 मुंबई सेंट्रल–गांधीनगर केपिटल वंदे भारत एक्सप्रेस को 13.04.2026 को वटवा स्टेशन पर समाप्त (शॉर्ट टर्मिनेट) किया जाएगा तथा वटवा–गांधीनगर केपिटल के बीच निरस्त रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 20902 गांधीनगर केपिटल–मुंबई सेंट्रल वंदे भारत एक्सप्रेस को 13.04.2026 को वटवा स्टेशन से प्रारंभ किया जाएगा तथा गांधीनगर केपिटल–वटवा के बीच निरस्त रहेगी।

पुनर्निर्धारण (Rescheduling)

▸▸ट्रेन संख्या 12009 मुंबई सेंट्रल–अहमदाबाद शताब्दी एक्सप्रेस 13.04.2026 को मुंबई सेंट्रल से 1 घंटा 15 मिनट विलंब से प्रस्थान करेगी।

निरस्त ट्रेनें (Cancelled Trains)

▸▸ट्रेन संख्या 69102 वटवा–वडोदरा मेमू 13.04.2026 को निरस्त रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 69115 वडोदरा–वटवा मेमू 13.04.2026 को निरस्त रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 22959 वडोदरा–जामनगर इंटरसिटी 12.04.2026 को निरस्त रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 22960 जामनगर–वडोदरा इंटरसिटी 13.04.2026 को निरस्त रहेगी।

आंशिक निरस्त (Partial Cancellation)

▸▸ट्रेन संख्या 19033 बलसाड़–अहमदाबाद गुजरात क्वीन 13.04.2026 को वडोदरा–अहमदाबाद के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

विनियमन (Regulation of Trains)

▸▸ट्रेन संख्या 19436 आसनसोल–अहमदाबाद एक्सप्रेस 13.04.2026 को वडोदरा मण्डल में 2 घंटा 10 मिनट रेगुलेट की जाएगी।

▸▸ट्रेन संख्या 12834 हावड़ा–अहमदाबाद एक्सप्रेस 13.04.2026 को वडोदरा मण्डल में 2 घंटा 10 मिनट रेगुलेट की जाएगी।

▸▸ट्रेन संख्या 12478 श्री माता वैष्णो देवी कटरा–जामनगर एक्सप्रेस 13.04.2026 को वडोदरा मण्डल में 1 घंटा 45 मिनट रेगुलेट की जाएगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य अद्यतन जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

सामाजिक न्याय के संदेश को शब्दों में पिरोते कर्मचारी भावनगर मंडल में आंबेडकर जयंती पर निबंध प्रतियोगिता

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा रेलवे कम्युनिटी हॉल, भावनगर में आज दिनांक 10 अप्रैल 2026 को प्रातः 11:00 बजे भारत रत्न डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में "डॉ. बी.आर. आंबेडकर : भारत में सामाजिक न्याय के वास्तुकार" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में भावनगर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा अपने विचारों के माध्यम से डॉ. आंबेडकर के सामाजिक न्याय, समानता एवं संवैधानिक मूल्यों से संबंधित सिद्धांतों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज में समरसता एवं न्याय की स्थापना में डॉ. आंबेडकर के योगदान को रेखांकित किया।

यह कार्यक्रम मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर श्री दिनेश वर्मा जी की प्रेरणा एवं वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन जी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। विजेताओं को आगामी डॉ. बी.आर. आंबेडकर जयंती समारोह के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा।

इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने डॉ. आंबेडकर के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने तथा सामाजिक समरसता, समानता एवं न्याय को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

भावनगर – हरिद्वार के बीच 12 अप्रैल से प्रत्येक रविवार को चलेगी "साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन",टिकटों की बुकिंग 10 अप्रैल, 2026 (शुक्रवार) से प्रारंभ होगी

यात्रियों की बढ़ती भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश अवधि में अतिरिक्त यात्री सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से ट्रेन ऑन डिमांड (TOD) के अंतर्गत विशेष ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। यह ट्रेन विशेष किराया (Special Fare) पर संचालित की जाएगी।

यात्रियों की सुविधा हेतु पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर टर्मिनस और हरिद्वार के बीच "साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन" संचालित की जाएगी। यह सेवा अप्रैल 2026 से मई 2026 के मध्य दोनों दिशाओं में कुल 8-8फेरों के साथ चलाई जाएगी। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है—

ट्रेन नंबर 09271 भावनगर टर्मिनस – हरिद्वार साप्ताहिक स्पेशल 12 अप्रैल, 2026 से 31 मई, 2026 तक संचालित होगी। यह ट्रेन भावनगर टर्मिनस से प्रत्येक रविवार को प्रातः 4.25 बजे प्रस्थान कर सोमवार को दोपहर 15.00 बजे हरिद्वार पहुंचेगी।

इसी प्रकार वापसी में ट्रेन संख्या 09272 हरिद्वार– भावनगर साप्ताहिक स्पेशल 13 अप्रैल, 2026 से 01 जून, 2026 तक संचालित होगी। यह ट्रेन हरिद्वार से प्रत्येक सोमवार को सायं 16.25 बजे प्रस्थान कर बुधवार को प्रातः 04.35 बजे भावनगर टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सिहोर, धोला, बोटाद, सुरेन्द्रनगर गेट, विरमगाम, आम्बली रोड, गांधीनगर कैपिटल, महेसाना, पालनपुर जं., आबूरोड, पिण्डवाड़ा, फालना, मारवाड़ जं., पाली मारवाड़, लूनी जं., जोधपुर जं., गोटन, मेड़ता रोड जं., डेगाना जं., छोटी खाटू, डीडवाना, लाडनूं, सुजानगढ़, रतनगढ़ जं., चूरू, सादुलपुर जं., सिवानी, हिसार जं., भिवानी जं., कलानौर कलां, रोहतक जं., पानीपत जं., अम्बाला कैंट जं., सहारनपुर जं. एवं रूड़की स्टेशनों पर ठहरेगी। ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर तथा जनरल श्रेणी के कोच उपलब्ध रहेंगे।

ट्रेन नंबर 09271 के लिए टिकटों की बुकिंग 10 अप्रैल, 2026 (शुक्रवार) सायं 17.00 बजे से यात्री आरक्षण केंद्रों एवं आईआरसीटीसी की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रारंभ होगी। यात्रीगण ट्रेन के समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने यात्रियों से अपील की है कि वे इस विशेष ट्रेन सेवा का अधिकतम लाभ उठाकर अपनी यात्रा को सुगम एवं सुविधाजनक बनाएं।

सूरत में गीता ज्ञान का भव्य शुभारंभ: "कृष्णं वंदे जगतगुरुम्" थीम के साथ तीन दिवसीय आध्यात्मिक आयोजन की शुरुआत

सूरत शहर एक बार फिर आध्यात्मिक ऊर्जा और भक्ति के रंग में रंग गया है, जहां सोशल आर्मी ग्रुप की ओर से त्रिदिवसीय श्रीमद् भगवद् गीता कोर्स का भव्य शुभारंभ किया गया। संपदा फेस्टिविटी स्थल पर 9, 10 और 11 अप्रैल को आयोजित इस कार्यक्रम ने पहले ही दिन से श्रद्धालुओं और युवाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। "कृष्णं वंदे जगतगुरुम्" की भावपूर्ण थीम के साथ शुरू हुए इस आयोजन में भक्ति, ज्ञान और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का अद्भुत संगम देखने को मिला।

कार्यक्रम के पहले दिन ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु और युवा उपस्थित हुए, जिससे पूरा स्थल आध्यात्मिक वातावरण में डूब गया। आयोजन का मुख्य उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि युवाओं को श्रीमद् भगवद् गीता के शाश्वत ज्ञान से जोड़कर जीवन में सकारात्मक दिशा देना है। इस पहल को समाज में बढ़ती मानसिक तनाव, नकारात्मक सोच और दिशाहीनता के बीच एक महत्वपूर्ण प्रयास के रूप में देखा जा रहा है।

मुख्य वक्ता पारसभाई पांधी ने अपने संबोधन में गीता के गूढ़ संदेशों को सरल भाषा में समझाते हुए कहा कि जीवन में संतुलन, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण तभी विकसित हो सकता है जब व्यक्ति अपने विचारों को नियंत्रित करना सीखे। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे भौतिक सफलता के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति पर भी ध्यान दें, क्योंकि वही जीवन को वास्तविक अर्थ प्रदान करती है।

इस अवसर पर भक्ति का वातावरण उस समय और भी अधिक गहरा हो गया जब गुजरात की प्रसिद्ध गायिका उर्वशीबेन रादड़िया और गायक ऋषभ अग्रावत ने एक से बढ़कर एक कृष्ण भजनों की प्रस्तुति दी। उनके मधुर स्वर और भक्ति से भरे गीतों ने पूरे माहौल को कृष्णमय बना दिया। श्रद्धालु भजनों में इतने डूब गए कि पूरा पंडाल "हरे कृष्ण" के जयकारों से गूंज उठा।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने भी इस आयोजन को विशेष बना दिया। नृत्य कलाकार अमीबेन पटेल और उनकी टीम ने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन प्रसंगों पर आधारित मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया, जिसने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। रासलीला और कृष्ण लीला के दृश्यों ने लोगों को धार्मिक अनुभूति के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत से भी जोड़ा।

इस भव्य आयोजन में शहर के कई गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही, जिनमें ईश्वरभाई धोलकिया, घनश्यामभाई शंकर, धीरुभाई नारोला, कनैयालाल नारोला, राकेशभाई दुधात, अश्विनभाई सभाया और पियूषभाई केवडिया प्रमुख रहे। कार्यक्रम की गरिमा उस समय और बढ़ गई जब सूरत शहर के पुलिस कमिश्नर अनुपम सिंह गहलोत भी इस आयोजन में शामिल हुए और उन्होंने आयोजन की सराहना की।

आयोजकों के अनुसार इस तीन दिवसीय गीता कोर्स का मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से युवाओं में बढ़ती नकारात्मक सोच, तनाव और भटकाव को दूर कर उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से सही दिशा प्रदान करना है। गीता के उपदेशों को आधुनिक जीवन से जोड़कर यह संदेश दिया जा रहा है कि जीवन में केवल आर्थिक सफलता ही नहीं, बल्कि संस्कार, नैतिक मूल्य और मानसिक शांति भी उतनी ही आवश्यक है। कार्यक्रम में वक्ताओं ने यह भी स्पष्ट किया कि श्रीमद् भगवद् गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन का एक महान ग्रंथ है, जो व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर रहने की प्रेरणा देता है। अर्जुन और श्रीकृष्ण के संवाद के माध्यम से दिए गए उपदेश आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने हजारों वर्ष पहले थे।

सोशल आर्मी ग्रुप की यह पहल समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। आयोजन से जुड़े लोगों का कहना है कि इस तरह के कार्यक्रम युवाओं को न केवल आध्यात्मिक रूप से मजबूत करते हैं, बल्कि उन्हें जीवन के लक्ष्य को स्पष्ट रूप से समझने में भी मदद करते हैं।

तीन दिनों तक चलने वाला यह गीता कोर्स आने वाले दिनों में और भी कई प्रेरणादायक सत्रों, भक्ति संध्याओं और संवाद कार्यक्रमों के साथ आगे बढ़ेगा। श्रद्धालुओं में इसे लेकर भारी उत्साह देखा जा रहा है और उम्मीद की जा रही है कि यह आयोजन सूरत में आध्यात्मिक जागरूकता का एक नया अध्याय लिखेगा।

अहमदाबाद में मासूमों की मौत का रहस्य: 'डोसा थ्योरी' खारिज, डायरी के खुलासे ने खड़ा किया खौफनाक शक

गुजरात के अहमदाबाद शहर के चांदखेड़ा स्थित मारुति प्लाजा रेजीडेंसी में दो मासूम बेटियों की संदिग्ध मौत ने पूरे राज्य को झकझोर कर रख दिया है। शुरुआत में इस घटना को एक सामान्य हादसा मानते हुए फूड पॉइजनिंग से जोड़कर देखा गया, लेकिन जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ी, यह मामला एक रहस्यमयी और संभावित आपराधिक साजिश में बदलता नजर आ रहा है। अब यह केवल एक दुखद घटना नहीं, बल्कि कई गंभीर सवालों से घिरा मामला बन चुका है, जिसमें हत्या, आत्महत्या और पारिवारिक दबाव जैसे कई एंगल सामने आ रहे हैं।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, प्रजापति परिवार की दोनों बेटियों की तबीयत डोसा खाने के बाद अचानक बिगड़ गई थी, जिसके बाद उनकी मौत हो गई। इस वजह से शुरुआती जांच में यह माना गया कि शायद फूड पॉइजनिंग के कारण यह हादसा हुआ है। लेकिन इस थ्योरी को उस समय बड़ा झटका लगा, जब फॉरेंसिक साइंस लैब (FSL) की रिपोर्ट सामने आई। रिपोर्ट में स्पष्ट किया गया कि बच्चियों की मौत किसी जहरीले पदार्थ के सेवन से हुई है, न कि सामान्य फूड पॉइजनिंग से। इस खुलासे ने पूरे मामले की दिशा ही बदल दी।

जांच के दौरान पुलिस को घर से सल्फास की गोलियां भी बरामद हुई हैं, जो आमतौर पर एक अत्यंत घातक जहर के रूप में जानी जाती हैं। इस बरामदगी के बाद अब पुलिस इस संभावना पर भी गंभीरता से विचार कर रही है कि बच्चियों को जानबूझकर जहर दिया गया हो या फिर यह कोई सामूहिक आत्महत्या का प्रयास हो सकता है। हालांकि, अभी तक किसी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी, लेकिन

हालात निश्चित रूप से संदिग्ध हैं।

इस मामले में सबसे चौंकाने वाला मोड़ उस समय आया, जब पुलिस को घर से एक डायरी मिली। इस डायरी में कथित तौर पर मां भावना प्रजापति द्वारा लिखे गए कुछ नोट्स मिले हैं, जिनमें बेटे की चाहत का जिक्र किया गया है। डायरी में यह संकेत भी मिला है कि परिवार पहली बेटी के बाद दूसरे बच्चे के रूप में बेटे की उम्मीद कर रहा था। इस खुलासे ने जांच एजेंसियों को एक नए और संवेदनशील एंगल की ओर मोड़ दिया है—क्या बेटे की चाहत ने इस भयावह घटना को जन्म दिया?

भारत जैसे समाज में, जहां आज भी कई जगहों पर पुत्र को प्राथमिकता दी जाती है, यह मामला एक गंभीर सामाजिक प्रश्न भी खड़ा करता है। यदि यह एंगल सही साबित होता है, तो यह केवल एक आपराधिक मामला नहीं रहेगा, बल्कि यह सामाजिक सोच की एक भयावह तस्वीर भी पेश करेगा, जहां मासूम बेटियों की जान तक की कीमत चुकानी पड़ती है। पुलिस ने इस मामले में अब तक लगभग 25 लोगों के बयान दर्ज किए हैं। पड़ोसियों, डेयरी कर्मचारियों और परिवार के करीबी लोगों से पूछताछ की जा रही है, ताकि घटना के हर पहलू को समझा जा सके। इसके अलावा, पति-पत्नी की कॉल डिटेल रिकॉर्ड (CDR) भी खंगाली जा रही है, जिससे यह पता लगाया जा सके कि घटना से पहले और बाद में उनकी गतिविधियां क्या थीं और किन लोगों से उनका संपर्क था।

जांच में एक और महत्वपूर्ण पहलू सामने आया है कि परिवार का एक मेडिकल स्टोर भी है। पुलिस को शक है कि जहरीले पदार्थ का स्रोत इसी स्टोर से जुड़ा हो सकता है। इस दिशा में जांच को आगे बढ़ाते हुए क्राइम ब्रांच ने मेडिकल स्टोर की सीसीटीवी फुटेज जब्त कर ली है और उसकी गहन जांच की जा रही है। यदि यह साबित होता है कि जहर इसी स्टोर से लिया गया, तो मामला और भी गंभीर हो सकता है। इसके साथ ही, परिवार के मुखिया विमल प्रजापति की जीवनशैली भी जांच के दायरे में आ गई है। जानकारी के अनुसार, वह मॉडलिंग में करियर बनाने की कोशिश कर रहा था और ऑस्ट्रेलिया जाने की योजना बना रहा था। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि क्या इस महत्वाकांक्षा या किसी अन्य व्यक्तिगत कारण का इस घटना से कोई संबंध है। क्राइम ब्रांच ने परिवार के अन्य सदस्यों, जिनमें दादा-दादी भी शामिल हैं, को पूछताछ के लिए बुलाया है। पुलिस हर उस पहलू की जांच कर रही है, जिससे इस रहस्यमयी घटना की सच्चाई सामने आ सके। फिलहाल, यह स्पष्ट है कि मामला बेहद जटिल है और इसमें कई परतें हैं, जिन्हें एक-एक कर खोलना होगा।

यह घटना केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं है, बल्कि यह समाज के सामने कई गंभीर सवाल भी खड़े करती है—क्या आज भी बेटियों को लेकर मानसिकता में बदलाव नहीं आया? क्या पारिवारिक दबाव और सामाजिक सोच इतनी हावी हो सकती है कि मासूम जिंदगियों की बलि चढ़ जाए?

फिलहाल, सभी की नजरें पुलिस जांच पर टिकी हैं। आने वाले दिनों में फॉरेंसिक रिपोर्ट, कॉल रिकॉर्ड और पूछताछ के आधार पर इस मामले की सच्चाई सामने आएगी। लेकिन इतना तय है कि यह मामला केवल एक अपराध की कहानी नहीं, बल्कि समाज के उस कड़वे सच का आईना भी है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

सूरत में भोंदूबाबा अशोक खरात रेप केस में और खुलासे, 5 दिन की पुलिस हिरासत में भेजा गया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। महिलाओं के यौन शोषण और ब्लैकमेल के आरोप में जेल में बंद भोंडुबाबा अशोक खरात को गिरफ्तार कर महाराष्ट्र के नासिक जिले की एक अदालत में वीडियो लिंक के माध्यम से पेश किया गया। उन पर अपने ही कार्यालय की एक कर्मचारी की सात महीने की गर्भवती पत्नी का यौन उत्पीड़न करने का आरोप है।

गुरुवार को उन्हें पांच दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। रिमांड आवेदन पर बहस के दौरान यह खुलासा हुआ कि पुलिस को अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि अशोक खरात अपने ग्राहकों को डराने के लिए खिलौने वाले सांप और बाघ की खाल कहां से लाया था। इसलिए हिरासत की अवधि बढ़ा दी गई।

मेरठ में तलाक के बाद बेटी का ढोल-नगाड़ों से भव्य स्वागत, पिता का प्रेरणादायक संदेश वायरल हो गया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। समाज में जब बेटी का तलाक होता है, तो माता-पिता समेत पूरा परिवार दुखी होता है। लेकिन उत्तर प्रदेश के मेरठ में एक पिता ने सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए एक नया चलन शुरू किया है। बेटी के तलाक पर शोक मनाने के बजाय, परिवार ने ढोल-नगाड़ों और फूलों से उसका स्वागत किया और इस अवसर को उत्सव में बदल दिया।

इस अनोखे स्वागत का वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है और लोग पिता के इस प्रगतिशील विचार की सराहना कर रहे हैं। मेरठ के शास्त्रीनगर निवासी प्रतीक्षा का विवाह 2018 में शाहजहांपुर के मेजर गौरव अग्निहोत्री से हुआ था। दंपति का एक बेटा भी है, लेकिन शादी के कुछ समय बाद ही ससुराल वालों की ओर से उत्पीड़न और विवाद शुरू हो गए।

लंबे कानूनी संघर्ष के बाद, अदालत ने 4 अप्रैल को उनके तलाक को आधिकारिक रूप से मंजूरी दे दी। कानूनी लड़ाई जीतने के बाद जब प्रतीक्षा घर लौटीं, तो उनके पिता ने उन्हें हार न मानने के बजाय एक नई शुरुआत करने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रतीक्षा के पिता, जो एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं, ने इस अवसर को खास बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने अपनी बेटी की तस्वीर वाली काली टी-शर्ट पहनी थी, जिस पर लिखा था, "मैं अपनी बेटी से प्यार करता हूँ।" प्रतीक्षा के घर पहुँचते ही परिवार के सदस्यों ने नाच-गाना किया और उस पर फूल बरसाए। आसपास के लोग यह दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गए। चूंकि समाज में तलाक को आमतौर पर शर्मनाक या दुखद घटना माना जाता है, इसलिए पिता ने इस प्रेरणादायक कदम के बारे में कहा, "मैं अपनी बेटी को दुखी नहीं देख सकता। अगर वह छह साल के वैवाहिक जीवन में नाखुश थी और परेशान होकर घर लौटी है, तो मैं उसे और कष्ट नहीं सहने देना चाहता। मेरा उद्देश्य समाज को यह संदेश देना है कि बेटियाँ बेटों के समान होती हैं और वे समान प्रेम, सम्मान और समर्थन की हकदार हैं।" नेटिज़न्स इस पिता को "असली हीरो" कह रहे हैं और उनका कहना है कि अगर हर परिवार अपनी बेटियों के साथ इस तरह खड़ा रहे, तो घरेलू हिंसा और सामाजिक कलंक के खिलाफ लड़ाई आसान हो जाएगी। इसे ही कहते हैं कि बेटी प्रेम

राजस्थान JJM घोटाला: 960 करोड़ के जल जीवन मिशन में बड़ा खुलासा, रिटायर्ड IAS सुबोध अग्रवाल गिरफ्तार, जांच में बढ़ी हलचल

जयपुर/नई दिल्ली। राजस्थान में केंद्र सरकार की सबसे महत्वाकांक्षी योजनाओं में शामिल जल जीवन मिशन से जुड़ा कथित 960 करोड़ रुपये का घोटाला अब एक बड़े प्रशासनिक और राजनीतिक संकट में बदलता नजर आ रहा है। इस मामले में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (ACB राजस्थान) ने पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव (PHED) और रिटायर्ड आईएएस अधिकारी सुबोध अग्रवाल को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तारी के बाद उन्हें जयपुर लाया गया, जहां विशेष जांच दल (SIT) उनसे लगातार पूछताछ कर रहा है।

यह मामला प्रकरण संख्या 245/2024 के तहत दर्ज किया गया था और पिछले कई महीनों से इसकी गहन जांच चल रही थी। ACB की कई टीमों ने राजस्थान के साथ-साथ पांच अन्य राज्यों में करीब 50 दिनों तक लगातार छापेमारी और दस्तावेजों की जांच की, जिसके बाद यह गिरफ्तारी संभव हो सकी। जांच एजेंसियों का दावा है कि यह घोटाला केवल कुछ टेंडरों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके प्रभाव में हजारों करोड़ रुपये के सरकारी प्रोजेक्ट्स प्रभावित हुए हैं।

जांच में सामने आए आरोपों के अनुसार, टेंडर प्रक्रिया में जानबूझकर ऐसे नियम और शर्तें जोड़ी गईं, जिनसे चयन प्रक्रिया पर नियंत्रण आसान हो सके। खासतौर पर 50 करोड़ रुपये से अधिक के प्रोजेक्ट्स में साइट विजिट प्रमाण-पत्र को अनिवार्य करने का नियम जोड़ा गया, जिससे बोली लगाने वाली कंपनियों की पहचान और प्रभाव पहले ही चरण में उजागर हो जाती थी। इस बदलाव के बाद आरोप है कि टेंडर प्रक्रिया में प्रतिस्पर्धा कम हो गई और चुनिंदा ठेकेदारों को फायदा मिलने लगा।

जांच रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि कई मामलों में फर्जी दस्तावेजों का इस्तेमाल किया गया। इनमें इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड के नाम से कथित फर्जी कार्य पूर्णता प्रमाण पत्र तैयार किए गए, जिनके आधार पर ठेकेदार कंपनियों ने बड़े पैमाने पर टेंडर हासिल किए। इस पूरी प्रक्रिया में मेसर्स गणपति ट्यूबवेल कंपनी और मेसर्स श्याम ट्यूबवेल कंपनी जैसी फर्मों की भूमिका संदिग्ध पाई गई है। ACB का दावा है कि इस नेटवर्क के जरिए करीब 960 करोड़ रुपये के सीधे टेंडर प्रभावित हुए, जबकि व्यापक स्तर पर यह असर 20,000 करोड़ रुपये तक के प्रोजेक्ट्स पर पड़ा है। जांच में यह भी पाया गया कि टेंडर की लागत में 30 से 40 प्रतिशत तक असामान्य बढ़ोतरी हुई, जिसे विभागीय स्तर पर मंजूरी भी मिलती रही। यह स्थिति इस बात की ओर इशारा करती है कि केवल तकनीकी गलती नहीं, बल्कि एक संगठित प्रणाली के तहत गड़बड़ी की गई।

अब तक इस मामले में कुल 10 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है, जिनमें कई वरिष्ठ अभियंता, सेवानिवृत्त अधिकारी और निजी ठेकेदार शामिल हैं। इनमें दिनेश गोयल (मुख्य अभियंता प्रशासन), के.डी. गुप्ता (मुख्य अभियंता ग्रामीण), सुभांशु दीक्षित, सुशील शर्मा, निरिल कुमार, विशाल सक्सेना (निलंबित), अरुण श्रीवास्तव (सेवानिवृत्त), डी.के. गौड़ (सेवानिवृत्त), महेंद्र प्रकाश सोनी और मुकेश पाठक जैसे नाम शामिल हैं। इसके अलावा तीन अन्य आरोपी—मुकेश गोयल, जितेंद्र शर्मा और सजीव गुप्ता—फिलहाल फरार हैं और उनके खिलाफ स्थायी गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिए गए हैं।

इन फरार आरोपियों की संपत्ति कुर्क करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है, जिससे जांच एजेंसियां इस पूरे नेटवर्क की आर्थिक जड़ तक पहुंचने की कोशिश कर रही हैं। ACB अधिकारियों का मानना है कि यह घोटाला केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें एक संगठित तंत्र काम कर रहा था, जिसमें तकनीकी और प्रशासनिक दोनों स्तरों पर मिलीभगत के संकेत मिलते हैं।

जल जीवन मिशन भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य हर घर तक नल से शुद्ध पेयजल पहुंचाना है। राजस्थान में इस योजना के तहत हजारों करोड़ रुपये के कार्य स्वीकृत किए गए थे, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में लगातार टेंडर प्रक्रिया, गुणवत्ता नियंत्रण और भुगतान व्यवस्था को लेकर सवाल उठते रहे हैं। अब यह मामला सीधे भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों तक पहुंच गया है, जिसने पूरे प्रशासनिक ढांचे को कठघरे में खड़ा कर दिया है।

ACB सूत्रों के अनुसार, सुबोध अग्रवाल से पूछताछ के दौरान कई और बड़े नाम सामने आ सकते हैं। जांच एजेंसी यह भी मान रही है कि टेंडर अनुमोदन से लेकर भुगतान तक की पूरी श्रृंखला में कई स्तरों पर अनियमितताएं हुई हैं। आने वाले दिनों में इस मामले में और गिरफ्तारियां और बड़े खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है।

फिलहाल, राजस्थान प्रशासन और जल आपूर्ति विभाग में इस गिरफ्तारी के बाद हलचल तेज हो गई है। सरकार और जांच एजेंसियों की नजर अब इस बात पर है कि इस कथित नेटवर्क की जड़ें कितनी गहरी हैं और इसमें और कौन-कौन से बड़े नाम शामिल हो सकते हैं।

दिल्ली के प्रशांत विहार में डबल मर्डर से सनसनी, रोहिणी में खून से लथपथ मिले दो शव; एक आरोपी गिरफ्तार, जांच तेज

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के उत्तर-पश्चिम जिले में स्थित प्रशांत विहार थाना क्षेत्र में हुई दोहरे हत्याकांड ने पूरे इलाके को दहला दिया है। रोहिणी सेक्टर-10 के ग्रीन ऑरा बैंक्वेट हॉल के पास डीडीए की खाली जमीन पर दो अज्ञात व्यक्तियों के शव खून से लथपथ हालत में मिलने से सनसनी फैल गई। पुलिस ने घटनास्थल से अहम सबूत जुटाए हैं और एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि मामले की जांच कई कोणों से आगे बढ़ाई जा रही है।

घटना की शुरुआत उस समय हुई जब स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी कि दो व्यक्ति जमीन पर अचेत अवस्था में पड़े हुए हैं और उनके शरीर से खून निकल रहा है। सूचना मिलते ही प्रशांत विहार थाना पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। पुलिस टीम ने पाया कि दोनों व्यक्ति गंभीर रूप से घायल अवस्था में पड़े थे और उनके शरीर पर गहरे चोट के निशान थे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए दोनों को तत्काल डॉ. बीएसए अस्पताल भेजा गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया।

घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौके पर इकट्ठा हो गए। पुलिस ने तुरंत क्षेत्र को घेरकर फॉरेंसिक साइंस लैब (FSL) और क्राइम टीम को जांच के लिए बुलाया। विशेषज्ञों ने मौके से खून के नमूने, मिट्टी, कपड़ों के टुकड़े और अन्य संभावित सबूत इकट्ठा किए हैं, जिन्हें आगे की जांच के लिए सुरक्षित रखा गया है।

सबसे अहम बात यह सामने आई है कि घटनास्थल के पास एक जेसीबी मशीन (नंबर HR-51CS-8050) खड़ी मिली, जिसे पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि यह हत्या किसी निर्माण कार्य या मिट्टी हटाने के काम के दौरान हुए विवाद से जुड़ी हो सकती है। पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि क्या यह जेसीबी मशीन घटना के समय सक्रिय थी और क्या इसका इस्तेमाल किसी प्रकार के संघर्ष या शवों को हटाने में किया गया।

मृतकों की पहचान अब तक स्पष्ट नहीं हो सकी है। दोनों की उम्र लगभग 50 वर्ष के आसपास बताई जा रही है। पुलिस ने आसपास के इलाकों में गुमशुदगी की रिपोर्ट खंगालनी शुरू कर दी है और विभिन्न थानों को अलर्ट भेजा गया है ताकि किसी भी व्यक्ति की गुमशुदगी से इन शवों का मिलान किया जा सके।

जांच के दौरान पुलिस को एक महत्वपूर्ण गवाह का बयान मिला है। प्रत्यक्षदर्शी रोहित कुमार, जो बिहार के मुजफ्फरनगर जिले के रामनगर गांव के रहने वाले हैं, ने पुलिस को घटना के समय की स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी है। उनके बयान को जांच में अहम कड़ी माना जा रहा है, क्योंकि उन्होंने मौके पर मौजूद लोगों और झगड़े जैसी गतिविधियों का संकेत दिया है। पुलिस अब उनके बयान की पुष्टि सीसीटीवी फुटेज और अन्य तकनीकी सबूतों से कर रही है।

इसी बीच पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान राजगीर सिंह के रूप में हुई है, जो शालीमार बाग क्षेत्र के 'जोकरि टी-हट्स' इलाके का रहने वाला बताया गया है। प्रारंभिक पूछताछ में पुलिस को कुछ अहम सुराग मिले हैं, लेकिन हत्या के पीछे का असली मकसद अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि क्या आरोपी अकेला था या इस वारदात में अन्य लोग भी शामिल थे।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, यह मामला सिर्फ एक सामान्य झगड़े का नहीं बल्कि किसी बड़े विवाद या आर्थिक लेनदेन से भी जुड़ा हो सकता है। घटनास्थल की परिस्थितियां इस ओर इशारा कर रही हैं कि हत्या अचानक नहीं हुई, बल्कि इसके पीछे कोई योजना या पुराना विवाद हो सकता है।

इलाके में इस वारदात के बाद डर और तनाव का माहौल है। स्थानीय लोग यह समझ नहीं पा रहे हैं कि सार्वजनिक स्थान और खुले इलाके में इस तरह की हिंसक घटना कैसे हो गई। पुलिस ने इलाके में गश्त बढ़ा दी है और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है, ताकि घटना से पहले और बाद की हर गतिविधि का पता लगाया जा सके।

पुलिस की प्राथमिकता अब मृतकों की पहचान करना है, क्योंकि पहचान के बिना आगे की जांच और भी कठिन हो रही है। इसके साथ ही पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि क्या यह मामला किसी आपसी रंजिश, जमीन विवाद, निर्माण कार्य के ठेके या फिर किसी आपराधिक गिरोह से जुड़ा हुआ है। FSL टीम द्वारा जुटाए गए सबूतों को अब विस्तृत जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा गया है। रिपोर्ट आने के बाद यह स्पष्ट हो सकेगा कि मौत का कारण क्या था और क्या यह पूर्व नियोजित हत्या थी या अचानक हुई हिंसा का परिणाम।

फिलहाल पुलिस ने इस मामले को बेहद गंभीरता से लेते हुए कई टीमों का गठन किया है, जो अलग-अलग एंगल से जांच कर रही हैं। आने वाले दिनों में इस मामले में और गिरफ्तारियां होने की संभावना जताई जा रही है, क्योंकि पुलिस को शक है कि यह घटना किसी बड़े नेटवर्क या विवाद से जुड़ी हो सकती है।

दिल्ली के इस हाई-प्रोफाइल और संवेदनशील इलाके में हुई इस वारदात ने एक बार फिर सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं, और लोग इस बात से चिंतित हैं कि शहर के भीतर भी अब इस तरह की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं।

सोना वायदा में 644 रुपये और चांदी वायदा में 1371 रुपये की गिरावट: क्रूड ऑयल वायदा 162 रुपये तेज

मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 154435.51 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 22346.25 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 132089.15 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 36696 पॉइंट के स्तर पर ट्रेड हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3533.97 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 13794.60 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा 152685 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 152990 रुपये और नीचे में 151745 रुपये पर पहुंचकर, 153434 रुपये के पिछले बंद के सामने 644 रुपये या 0.42 फीसदी घटकर 152790 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा 227 रुपये या 0.19 फीसदी औंधकर 122192 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 28 रुपये या 0.18 फीसदी औंधकर 15304 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी मई वायदा 150905 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 151755 रुपये और नीचे में 150414 रुपये पर पहुंचकर, 667 रुपये या 0.44 फीसदी औंधकर 151405 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन अप्रैल वायदा प्रति 10 ग्राम 151567 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 152183 रुपये और नीचे में 150848 रुपये पर पहुंचकर, 152366 रुपये के पिछले बंद के सामने 533 रुपये या 0.35 फीसदी औंधकर 151833 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा सत्र के आरंभ में 242515 रुपये के भाव पर खूलकर, 243704 रुपये के दिन के उच्च और 239546 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 243768 रुपये के पिछले बंद के सामने 1371 रुपये या 0.56 फीसदी लुढ़ककर 242397 रुपये प्रति किलो बोला गया। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 1307 रुपये या 0.53 फीसदी की गिरावट के साथ 244629 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 1112 रुपये या 0.45 फीसदी लुढ़ककर 244750 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कमोडिटी वायदाओं में 22346.25 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 132089.15 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 13794.60 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 36696 पॉइंट के स्तर

मेटल वर्ग में 2534.26 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा 15.05 रुपये या 1.26 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1208 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 1.05 रुपये या 0.32 फीसदी की तेजी के संग 331.9 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम अप्रैल वायदा 3.6 रुपये या 1.02 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 357.85 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा अप्रैल वायदा 1.2 रुपये या 0.62 फीसदी औंधकर 193.3 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 5824.52 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 9200 रुपये के भाव पर खूलकर, 9344 रुपये के दिन के उच्च और 9066 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 162 रुपये या 1.81 फीसदी की तेजी के संग 9095 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 158 रुपये या 1.77 फीसदी की बढ़त के साथ 9092 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा नैचुरल गैस अप्रैल वायदा 251.6 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 252.7 रुपये और नीचे में 247 रुपये पर पहुंचकर, 250.6 रुपये के पिछले बंद के सामने 3.5 रुपये या 1.4 फीसदी औंधकर 247.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अप्रैल वायदा 3.3 रुपये या 1.32 फीसदी लुढ़ककर 247.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अप्रैल वायदा 1002 रुपये पर खूलकर, 20 पैसे या 0.02 फीसदी बढ़कर 1013.8 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 9509.15 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 4285.44 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1960.65 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 371.82 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 24.94 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 176.85 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4693.05 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1116.67 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8907 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 53896 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26303 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 379956 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 56845 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7200 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 20626 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 82505 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17825 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 49647 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा 36696 पॉइंट पर खूलकर, 36696 के उच्च और 36696 के नीचले स्तर को छूकर, 343 पॉइंट बढ़कर 36696 पॉइंट के स्तर पर ट्रेड हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 10000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 21.5 रुपये की बढ़त के साथ 207 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 250 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1 रुपये की गिरावट के साथ 9.85 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 208.5 रुपये की गिरावट के साथ 1447.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 42 रुपये की बढ़त के साथ 657.5 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1250 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 5.56 रुपये की बढ़त के साथ 11.9 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 335 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 71 पैसे के सुधार के साथ 3.71 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 8000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 19.1 रुपये की गिरावट के साथ 116.4 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 250 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 80 पैसे के सुधार के साथ 11.1 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 21 रुपये की गिरावट के साथ 771.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 180000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 53 रुपये की बढ़त के साथ 379 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1150 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 43 पैसे की नरमी के साथ 7.53 रुपये हुआ।